केन्द्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़
ZONAL INSTITUTE OF EDUCATION AND TRAINING, CHANDIGARH

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र / Sample Paper

शैक्षिक सत्र / Session - 2021-22

सत्र / Term - 2

कक्षा / Class - बारहवीं

विषय / Subject - हिन्दी (केन्द्रिक)

विषय कोड / Subject Code - 302

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़

सेक्टर - 33 सी, चंडीगढ़

वेबसाइट- zietchandigarh.kvs.gov.in ई-मेल

:kvszietchd@gmail.com

दूरभाष-0172-2621302, 2621364

हमारे संरक्षक

1. श्रीमती निधि पांडे, आईआईएस आयुक्त, के वि सं
2. डॉ. ई. प्रभाकर अपर आयुक्त (शैक्षिक)
3. श्रीमती पिया ठाकुर संयुक्त आयुक्त (शैक्षिक)
4. श्री सत्य नारायण गुलिया संयुक्त आयुक्त (वित्त)
5. श्री एन. आर. मुरली संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण)
6. श्री एस. एस. रावत संयुक्त आयुक्त (कार्मिक)

DIRECTOR'S MESSAGE

Our aim is to provide such brief study materials and sample papers to the student that not only guides students to the path of success, but also inspires them to recognize and explore their own inner potential. The Board exam preparation is based on three pillars – **Concept Clarity, Contextual familiarity and Application Expertise**. Our innovative and dedicated teaching materials ensure that every student gets a firm grip of each of these pillars so very essential for these arduous preparations.

We also understand the importance of CBSE board exam as students' future goal depends upon the performance in board exams. We know that in pandemic situation the students feel a lot of pressure of performance in board exam. It is very important to develop the right exam temperament in students so they can tackle the pressure & surprises easily. In this direction, to release such brief study materials and sample papers will help to the students a lot.

विषय-सूची / INDEX

पाठ्य विवरण	पृष्ठ संख्या
1. नीलपत्र / प्रश्नपत्र का प्रतिरूप	1
2. सीबीएसई प्रतिदर्श प्रश्नपत्र	2
3. सीबीएसई अंक योजना	5
4. प्रश्नपत्र का प्रतिरूप -1	10
5. अंक योजना -1	12
6. प्रश्नपत्र का प्रतिरूप -2	23
7. अंक योजना -2	25
8. प्रश्नपत्र का प्रतिरूप -3	37
9. अंक योजना -3	39

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़

नील पत्र - 2021-22
विषय - हिंदी (आधार)
विषय कोड - 302 / सत्र - 2
कक्षा - बारहवीं

सामान्य निर्देश : -

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए।
- इस प्रश्नपत्र में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।
- इस प्रश्नपत्र में कुल सात प्रश्न पूछे गए हैं। आपको सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- प्रश्नों में आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।
- यह प्रश्नपत्र अधिकतम 40 अंक का होगा और इसके लिए दो घंटे का समय दिया जाएगा।

प्रश्न संख्या	पाठ्य वस्तु	निर्देशनुसार प्रश्न के उत्तर लिखना है	निर्धारित अंक
1.	रचनात्मक लेखन	अथवा सहित एक प्रश्न (5x1)	05
2.	पत्र लेखन	अथवा सहित एक प्रश्न (5x1)	05
3.	गद्य की विधाएँ- कहानी, नाटक	अथवा सहित दो प्रश्न (3x1+2x1)	05
4.	जनसंचार और अभिव्यक्ति माध्यम	अथवा सहित दो प्रश्न (3x1+2x1)	05
5.	आरोह भाग- 2 काव्य खंड	अथवा सहित दो प्रश्न (3x2)	06
6.	आरोह भाग- 2 गद्य खंड	अथवा सहित तीन प्रश्न (3x3)	09
7.	वितान (पूरक) भाग-2	अथवा सहित दो प्रश्न (3x1+2x1)	05
		कुल अंक	40

निर्धारित पाठ्यक्रम-

काव्य खंड- उषा- शमशेर बहादुर सिंह, कवितावली व लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप- तुलसीदास, रुबाइयाँ व गजल- फ़िराक गोरखपुरी।

काव्य खंड- पहलवान की ढोलक- फणीश्वरनाथ रेणु, नमक- रजिया सज्जाद जहीर, श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा व मेरी कल्पना का आदर्श समाज- डॉ भीम राव आम्बेडकर

पूरक खंड- अतीत में दबे पांव- ओम थानवी, डायरी के पन्ने- ऐन फ्रैंक

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2021-22

विषय - हिंदी (आधार)

(विषय कोड - 302)

कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समय : 2 घंटे **अधिकतम अंक : 40**

अंक

सामान्य निर्देश :-

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए :-
- इस प्रश्न पत्र में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।
- इस प्रश्न पत्र में कुल ***07*** प्रश्न पूछे गए हैं। आपको ***07*** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- प्रश्नों में आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

प्रश्न संख्या	कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन	अंक (20)
प्रश्न 1.	**निम्नलिखित दिए गए 03 शीर्षकों में से किसी 01 शीर्षक का चयन कर लगभग 200 शब्दों का एक रचनात्मक लेख लिखिए :-** • प्रातः काल योग करते लोग • दुर्घटना से देर भली • जिन्हें जल्दी थी, वे चले गए	5x1=5
प्रश्न 2.	अपने क्षेत्र के मुख्य चिकित्सा अधिकारी, उनके चिकित्सकों और सहायक कर्मचारियों को कोरोना काल में उनके द्वारा किये गए कार्यों की प्रशंसा और सरहाना करते हुए एक पत्र लिखिए। ***अथवा***	5x1=5

	बस चालकों की असावधानी से हो रही दुर्घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।	
प्रश्न 3. (i)	कहानी की परिभाषा बताते हुए इसके तत्त्वों के नाम लिखें। ***अथवा*** नाटक में अभिनय और संवाद योजना के महत्त्व को रेखांकित कीजिए।	3x1=3
प्रश्न 3. (ii)	रेडियो नाटक की अवधि छोटी क्यों रखी जाती है? ***अथवा*** कहानी में क्लाइमेक्स का क्या महत्त्व है?	2x1=2
प्रश्न 4. (i)	समाचार लेखन की रचना प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए। ***अथवा*** फ़ीचर कैसे लिखा जाता है?	3x1=3
प्रश्न 4. (ii)	समाचार और फ़ीचर में मुख्य अंतर क्या होता है? ***अथवा*** समाचार लेखन के छः ककार कौन से हैं?	2x1=2
प्रश्न संख्या	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग - 2 तथा अनुपूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग – 2**	**अंक (20)**
प्रश्न 5.	**निम्नलिखित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**	3x2=6
(i)	शमशेर की कविता 'उषा' गाँव के जीवन का जीवंत चित्रण है। पुष्टि कीजिए।	3
(ii)	'कवितावली' के आधार पर सिद्ध कीजिए कि तुलसीदास को अपने समय की आर्थिक-सामाजिक समस्याओं की समझ थी।	3
(iii)	फ़िराक की गज़ल में अपना परदा खोलने से क्या आशय है?	3
प्रश्न 6.	**निम्नलिखित 04 प्रश्नों में से किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**	3x3=9
(i)	जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक अंग न मानने के पीछे डॉ. आंबेडकर के क्या तर्क थे?	3
(ii)	नमक कहानी में नमक की पुड़िया इतनी महत्त्वपूर्ण क्यों हो गई थी? कस्टम अधिकारी उसे लौटाते हुए भावुक क्यों हो उठा था?	3
(iii)	बाबा भीमराव आंबेडकर के अनुसार उनकी कल्पना का आदर्श समाज	3

	कैसा होना चाहिए? अपने शब्दों में अभिव्यक्त करें।	
(iv)	'ढोल में तो जैसे पहलवान की जान बसी थी।' 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर तर्क सहित पंक्ति को सिद्ध कीजिए।	3
प्रश्न 7.	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**	3+2=5
(i)	एन फ्रैंक की डायरी किट्टी को संबोधित कर ही क्यों लिखी गई है? यह डायरी वह किसी अपने को भी संबोधित कर सकती थी? तर्क सहित उत्तर दीजिए। ***अथवा*** मोहनजोदाड़ो की सभ्यता को लो - प्रोफाइल सभ्यता क्यों माना गया है?	3x1=3
(ii)	"काश, कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता। अफ़सोस, ऐसा व्यक्ति मुझे अब तक नहीं मिला।" एन फ्रेंक की इस पंक्ति का आशय स्पष्ट करें। ***अथवा*** सिंधु सभ्यता के केंद्र में समाज था, राजा या धर्म नहीं! सिद्ध कीजिए।	2x1=2

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2021-22

विषय - हिंदी (आधार)

(विषय कोड - 302)

कक्षा – बारहवीं

अंक योजना

निर्धारित समय : 2 घंटे **अधिकतम अंक : 40 अंक**

सामान्य निर्देश :-

- अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
- वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर-बिंदु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं।
- यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न, किंतु उपयुक्त उत्तर दे तो उसे अंक दिए जाएँ।
- मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि अंक-योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।

प्रश्न संख्या	कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन	अंक (20)
प्रश्न 1.	**किसी *एक* विषय पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए:-** भूमिका - 1 अंक विषयवस्तु - 3 अंक भाषा - 1 अंक	5x1=5
प्रश्न 2.	2 **में से किसी** 1 **विषय पर पत्र (लगभग 80-100 शब्द-सीमा)** आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ - 1 अंक	5x1=5

	विषयवस्तु - 3 अंक भाषा - 1 अंक	
प्रश्न 3. (i)	**कहानी** गद्य साहित्य की वह सबसे अधिक रोचक एवं लोकप्रिय विधा है, जो जीवन के किसी विशेष पक्ष का मार्मिक, भावनात्मक और कलात्मक वर्णन करती है। "हिन्दी गद्य की वह विधा है जिसमे लेखक किसी घटना, पात्र अथवा समस्या का क्रमबद्ध ब्यौरा देता है, जिसे पढ़कर एक समन्वित प्रभाव उत्पन्न होता है, उसे **कहानी** कहते हैं"। ○ कथावस्तु ○ चरित्र-चित्रण ○ कथोपकथन ○ देशकाल ○ भाषा-शैली ○ उद्देश्य ***अथवा*** **अभिनय** किसी अभिनेता या अभिनेत्री के द्वारा किया जाने वाला वह कार्य है जिसके द्वारा वे किसी कथा को दर्शाते हैं, साधारणतया किसी पात्र के माध्यम से। **अभिनय** का उद्देश्य होता है किसी पद या शब्द के भाव को मुख्य अर्थ तक पहुँचा देना; अर्थात् दर्शकों या सामाजिकों के हृदय **में** भाव या अर्थ से अभिभूत करना"। **संवाद – नाटक में** नाटकार के पास अपनी और से कहने का अवकाश नहीं रहता। वह संवादों द्वारा ही वस्तु का उद्घाटन तथा पात्रों के चरित्र का विकास करता है। अतः इसके **संवाद** सरल , सुबोध , स्वभाविक तथा पात्रअनुकूल होने चाहिए।	3x1=3
प्रश्न 3. (ii)	श्रव्य माध्यम में मनुष्य की एकाग्रता सीमित होती है। ***अथवा*** चरम उत्कर्ष या क्लाइमेक्स कहानी का अंतिम तत्त्व होता है। इसमें कहानी के उद्देश्य की अभिव्यक्ति होती है। कहानी का उद्देश्य मनोरंजन के साथ साथ जीवन-संबंधी अनुभूतियों से मानव-मन का निकट परिचय कराना है।	2x1=2
प्रश्न 4. (i)	○ उल्टा पिरामिड शैली ○ इंट्रो , बॉडी और समापन	3x1=3

	अथवा **फीचर** लेखन किसी कहानी , उपन्यास की तरह ही कुछ बिंदुओं पर आधारित होता है– आरंभ, मध्य, चरम, समापन, भाषा – शैली, नेता तथा निष्कर्ष। **फीचर** लेखन का आरंभ किसी घटना, यात्रा आदि पर आधारित होता है। आरंभ में पाठक को कुछ ऐसी घटना का जिक्र करना चाहिए जिससे पूरा लेख पढ़ने की उत्सुकता पाठक के मन में बरकरार रहे।	
प्रश्न 4. (ii)	**समाचार और फीचर** में प्रमुख **अंतर** प्रस्तुतीकरण की शैली और विषयवस्तु की मात्रा का होता है। जहाँ उल्टा पिरामिड शैली में लिखा गया **समाचार** किसी विषय अथवा घटना को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करता है, वहीं **फीचर** उस **समाचार** को विस्तार से प्रस्तुत करता है। ***अथवा*** चार **ककार** (क्या, कब, कौन, कहाँ) सूचनात्मक व अन्तिम दो ककार (क्यों, कैसे) विवरणात्मक होते हैं।	2x1=2
प्रश्न संख्या	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग - 2 तथा अनुपूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग - 2**	**अंक (20)**
प्रश्न 5.	**निम्नलिखित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**	3x2=6
(i)	राख से लीपा हुआ चौका बहुत काली सिल स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मलना किसी की गौर झिलमिल देह का हिलना	3
(ii)	'कवितावली' में उद्धृत छंदों के अध्ययन से पता चलता है कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है। उन्होंने समकालीन समाज का यथार्थपरक चित्रण किया है। वे समाज के विभिन्न वर्गों का वर्णन करते हैं जो कई तरह के कार्य करके अपना निर्वाह करते हैं। तुलसी दास तो यहाँ तक बताते हैं कि पेट भरने के लिए लोग गलत-सही सभी कार्य करते हैं। उनके समय में भयंकर गरीबी व बेरोजगारी थी। गरीबी के कारण लोग अपनी संतानों तक को बेच देते थे। बेरोजगारी इतनी अधिक थी कि लोगों को भीख तक नहीं मिलती थी। दरिद्रता रूपी रावण ने हर तरफ हाहाकार मचा रखा था।	3
(iii)	परदा **खोलने** से आशय है – अपने बारे **में** बताना। यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे	3

	की निंदा करता है या बुराई करता है। तो वह स्वयं की बुराई कर रहा है। इसीलिए शायर ने कहा कि मेरा परदा **खोलने** वाले **अपना** परदा खोल रहे हैं।	
प्रश्न 6.	**निम्नलिखित 04 प्रश्नों में से किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**	**3x3=9**
(i)	1. जाति प्रथा श्रम का ही विभाजन नहीं करती बल्कि यह श्रमिक को भी बाँट देती है 2. जाति प्रथा में श्रम का जो विभाजन किया गया है, वह व्यक्ति की रुचि को ध्यान में रखकर नहीं किया गया है। 3. जाति प्रथा में पेशे का निर्धारण एक मनुष्य को जीवनभर के लिए दे दिया जाता है।	3
(ii)	इस **कहानी में नमक** की पुड़िया के महत्त्वपूर्ण बनने का यह कारण है कि भारत-पाक के बीच **नमक** का व्यापार गैरकानूनी **था**। दूसरे, यह विभाजन की यादों से जुड़ी है। **कस्टम अधिकारी नमक** की पुड़िया लौटाते हुए **भावुक हो** उठा क्योंकि हर व्यक्ति को जन्मभूमि से लगाव होता है। उस प्रेम की अनुभूति से वह **भावुक हो** उठा।	3
(iii)	उनका यह **आदर्श समाज** स्वतंत्रता, समता व भ्रातृता पर आधारित होगा।	3
(iv)	पहलवान का सारा जीवन ही ढोल की आवाज़ से उठता - गिरता है, पहलवान की ढोलक पूरे गाँव में संजीवनी बूटी का कार्य करती है, ढोल की थाप से पहलवान की कुश्ती के दाँव-पेंच निश्चित होते थे।	3
प्रश्न 7.	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**	3+2=5
(i)	अपनी **डायरी** में अपनी गुड़िया को वह पत्र लिखती है। गुड़िया को पत्र लिखते हुए अपरोक्ष रूप से वह खुद से **ही** बातें करती है। वह जानती है कि जिन बातों को वह लिख रही है, शायद उन्हें दूसरे व्यक्ति ठीक ढंग से न समझ पायें। इसीलिए उसे अपनी गुड़िया को **संबोधित** करते हुए पत्र लिखना पड़ा। ***अथवा*** लेखक ने सिंधु **सभ्यता** को '**लो प्रोफाइल**' **सभ्यता** कहा है। संसार के अन्य स्थानों पर खुदाई करने से राजतंत्र को प्रदर्शित करने वाले महल, धर्म की ताकत दिखाने	3x1=3

	वाले पूजा स्थल, मूर्तियाँ तथा पिरामिड मिले हैं। मोहनजोदड़ो में ऐसी कोई चीज नहीं मिली है जो राजसत्ता या धर्म के प्रभाव को दर्शाती है।	
(ii)	अकेलापन ही ऐन फ्रैंक के डायरी लेखन का कारण बना। यद्यपि वह अपने परिवार और वॉन दंपत्ति के साथ अज्ञातवास में दो वर्षों तक रही लेकिन इस दौरान किसी ने उसकी भावनाओं को समझने का प्रयास नहीं किया। पीटर यद्यपि उससे प्यार करता है लेकिन केवल दोस्त की तरह। जबकि हर किसी की शारीरिक जरूरतें होती हैं लेकिन पीटर उसकी इस ज़रूरत को नहीं समझ सका। माता-पिता और बहन ने भी कभी उसकी भावनाओं को गंभीरता से नहीं। समझी शायद इसी कारण वह डायरी लिखने लगी। ***अथवा*** इस सभ्यता को लेखक ने साधन-संपन्न माना है। इस सभ्यता ने भव्यता को महत्व नहीं दिया है। यह कलात्मकता को महत्व देती है। अतः हम कह सकते हैं कि यहाँ के लोग बोध कला में रुचि रखते थे। यहाँ की नगर व्यवस्था, पत्थर तथा धातु से बनी मूर्तियाँ, पशु-पक्षियों की आकृतियाँ, सुंदर मुहरें, खिलौने, बालों को सवारने का कंघा, गहने इत्यादि इसके सौंदर्य बोध का प्रमाण देते हैं। यहाँ पर आपको राजचिह्न या धर्म से संबंधित चिह्न नहीं मिलते हैं। यदि मिलते होते तो इसकी स्थिति बिलकुल अलग होती। यहाँ आम जनता से जुड़े चिह्न अधिक बिखरे हुए हैं। जिनका सौंदर्य बोध इसी कारण विद्यमान है। यह सभ्यता हर तरह से समाज-पोषित सभ्यता को दर्शाती है। यहाँ पर ताकत के चिह्न नहीं मिलते। यह सभ्यता आपसी समझ के कारण लंबे समय तक चली। यह आडंबर रहित है।	2x1=2

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 2021-22

विषय - हिंदी (आधार)

विषय कोड - 302 / सत्र - 2 (1)

कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समय : 2 घंटे अधिकतम अंक : 40

सामान्य निर्देश : -

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए।
- इस प्रश्नपत्र में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।
- इस प्रश्नपत्र में कुल सात प्रश्न पूछे गए हैं। आपको सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- प्रश्नों में आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

(कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन) 20 अंक

प्रश्न-1 निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से **किसी एक** शीर्षक का चयन कर लगभग 150 शब्दों में एक रचनात्मक लेख लिखिए- 5X1=5

(क) मनोरंजन के आधुनिक साधन

(ख) दुर्घटना से देर भली

(ग) युवा पीढ़ी और देश का भविष्य

प्रश्न-2 इन दिनों टेलीविजन पर अश्लील कार्यक्रमों की बाढ़-सी आ गई है। उन कार्यक्रमों पर रोक लगाने हेतु दूरदर्शन के महानिदेशक को पत्र लिखिए। 5X1=5

अथवा

पेड़ों के अंधाधुंध कटाव से मौसम चक्र में अचानक हो रहे बदलावों की चर्चा करते हुए किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

प्रश्न-3 (क) प्रश्न-3 (क) कहानी से क्या आशय है? इसके मुख्य तत्वों के नाम लिखिए। 3X1=3

अथवा

नाटक का क्या अर्थ है? किन्हीं दो प्रसिद्द नाटकों के नाम लिखिए।

प्रश्न-3 (ख) रेडियो नाटक की अवधि छोटी क्यों रखी जाती है? 2X1=2

अथवा

कहानी में भाषा-शैली का क्या महत्व है?

प्रश्न-4 (क) समाचार से क्या आशय है? समाचार के किन्हीं दो तत्वों के नाम बताइए। 3X1=3

अथवा

पत्रकारीय लेखन आप क्या समझते है? किन्हीं दो प्रकारों का उल्लेख कीजिए।

प्रश्न-4 (ख) समाचार लेखन में शीर्षक की क्या भूमिका होती है? 2X1=2

अथवा

रेडियो समाचार की भाषा की विशेषताएँ बताइए।

(पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 तथा पूरक पाठ्य पुस्तक वितान भाग-2) 20 अंक

प्रश्न-5 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3X2=6

(क) 'उषा' कविता में भोर के नभ के पल-पल परिवर्तित रूप का चित्रण है। स्पष्ट कीजिए।

(ख) भाई के शोक में डूबे श्रीराम का विलाप लक्ष्मण के प्रति उनके प्रेम भाव को दर्शाता है, कैसे?

(ग) फ़िराक की गजल में अपना परदा खोलने से क्या आशय है?

प्रश्न 6 निम्नलिखित चार प्रश्नों में से **किन्हीं तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3X3=9

(क) डॉ भीमराव आम्बेडकर के आदर्श समाज की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ख) नमक ले जाने के संबंध में साफिया के मन में क्या द्वंद्व चल रहा था?

(ग) डॉ भीमराव आम्बेडकर जाति व्यवस्था के पोषकों के विचारों से क्यों नहीं सहमत हैं?

(घ) हैजा और मलेरिया से पीड़ित गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के समय के दृश्य का वर्णन 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर कीजिए।

प्रश्न 7 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3X1=3

(क) ऐन फ्रैंक को अपनी डायरी 'किट्टी' को संबोधित करके लिखने की क्या आवश्यकता थी? वह किसी अपने को भी संबोधित करके लिख सकती थी? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

अथवा

मोहनजोदड़ों की सभ्यता की वास्तुकला ही उसका प्राण है, सिद्ध कीजिए।

(ख) महिला अधिकारों के विषय में ऐन फ्रैंक के क्या विचार थे? 'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए। 2X1=2

अथवा

खुदाई स्थल को घूमते हुए लेखक को राजस्थान के कुलधरा गाँव की याद क्यों हो आई?

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 2021-22
विषय - हिंदी (आधार)
विषय कोड - 302 / सत्र - 2 (1)
कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समय : 2 घंटे अधिकतम अंक : 40

सामान्य निर्देश : -

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए।
- इस प्रश्नपत्र में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।
- इस प्रश्नपत्र में कुल सात प्रश्न पूछे गए हैं। आपको सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- प्रश्नों में आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

(कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन) 20 अंक

प्रश्न-1 निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से **किसी एक** शीर्षक का चयन कर लगभग 150 शब्दों में एक रचनात्मक लेख लिखिए- 5

(क) मनोरंजन के आधुनिक साधन

भूमिका- मनोरंजन मनुष्य के जीवन का अहम हिस्सा है। दिन भर की थकान को दूर करने के लिए मनोरंजन दवा की तरह काम करता है । मनोरंजन हमें कुछ नया करने और किसी कार्य को पूरा करने में मदद करता है। मनोरंजन के बिना जीवन ऐसा है जैसे पेट्रोल के बिना कोई गाड़ी। जीवन में प्रगति करने में मनोरंजन टॉनिक का कार्य करता है। मनोरंजन का जीवन में उतना ही महत्वपूर्ण है जितना एक सच्चे दोस्त का। मनोरंजन के अभाव में जीवन में नीरासता आ जाती है।

विषयवस्तु- मनुष्य सामाजिक प्राणी है। दिनभर की थकान से बचने और हल्कापन महसूस करने के लिए, मनोरंजन जीवन के लिए आवश्यक हो जाता है। शरीर में स्फूर्ति आती है और कार्य क्षमता में वृद्धि होती है। पहले के समय में आज की तरह मनोरंजन के साधन उपलब्ध नहीं थे। घुड़सवारी, चौपाल, ढोलक, शतरंज और कई क्षेत्रीय संगीत से लोग अपना मनोरंजन कर लेते थे। किन्तु आज समय के साथ ही मनोरंजन के साधन भी बदल गए हैं। स्वयं को तरो ताजा रखने के लिए मनुष्य मनोरंजन के नवीन साधनों का आविष्कार करने के साथ-साथ मनोरंजन के परम्परागत साधनों का आधुनिकीकरण भी कर रहा है। आज के युग में मनोरंजन के असंख्य साधन उपलब्ध हैं। रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट और चित्रपट आज के श्रेष्ठ मनोरंजन के साधन हैं। आज के दौर में मनोरंजन के साधनों की कोई कमी नहीं है। मनोरंजन के कुछ साधन तो घर की चारदीवारी में उपलब्ध हैं और कुछ के लिए घर से बाहर जाना पड़ता है। टेलीविजन और मोबाइल मनोरंजन व ज्ञानवर्धन के महत्वपूर्ण साधन हैं। ये साधन विज्ञान तथा तकनीकी के माध्यम से जीवन के विविध पक्षों को उजागर कर मनुष्य को एक नई चेतना प्रदान करते हैं। खेल जगत की नाना प्रकार की जानकारी इनसे घर बैठे ही प्राप्त हो जाती है और अच्छा मनोरंजन भी हो जाता है। मनोरंजन के आधुनिक

साधनों में पर्यटन भी लोगों को आकर्षित कर रहा है। इससे राष्ट्रीय एकता को और अधिक मजबूत बनाने तथा सौहार्द बनाये रखने में विशेष सहायता मिलती है।

उपसंहार- अतः जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भोजन, वस्त्र, व्यायाम की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मन को स्वस्थ रखने के लिए मनोरंजन एक अनिवार्य साधन है। लेकिन इसकी साथर्कता इसी में है कि यह स्वस्थ्य और सीमित हो। मनोरंजन हमारे जीवन का एक अहम हिस्सा है। मनोरंजन होने से जीवन को जीने में मजा आता है और आप उस समय को बिना किसी परेशानी के काट लेते हैं। आपका मन इससे शांत रहता है जिससे नए-नए विचार उत्पन्न होते हैं।

(ख) दुर्घटना से देर भली

भूमिका- विज्ञान और तकनीकी के इस युग में मनुष्य के पास सब कुछ है लेकिन धैर्य नहीं है। आज हर व्यक्ति अपनी मंजिल की ओर तेजी से भागने में लगा हुआ है। उसे कहीं भी आना-जाना हो, हमेशा जल्दी रहती है। जल्दी पहुचने की इसी चाह में न जाने कितने लोग दुर्घटनाओं में अपनी जान गवां देते हैं। तेजी से बढ़ रही इन दुर्घटनाओं से बचने का बस एक ही उपाय है कि हम जहाँ भी जाएँ समय लेकर चलें और यातायात व सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन करें। हमें 'दुर्घटना से देर भली' कहावत को जीवन में सदा याद रखना चाहिए।

विषयवस्तु- 'दुर्घटना' एक ऐसा शब्द है जिसे पढ़ते ही कुछ दृश्य आंखों के सामने आ जाते हैं, जो भयावह होते हैं, त्रासद होते हैं, डरावने होते हैं, खूनी होते हैं। जीवन बड़ा अमूल्य है, इसे हर व्यक्ति को समझने की जरूरत है। अपने जीवन की सुरक्षा का दायित्व हमारा हैं। एक इन्सान की लापरवाही के चलते कई लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता हैं। अधिकतर सड़क हादसों का मुख्य कारण लापरवाही ही होता हैं। आज जरुरत है कि हम गम्भीरता के साथ इन बातों को अमल में लाए साथ ही दुपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनकर ही बाहर निकलने का निश्चय करके न सिर्फ हम अपने जीवन को सुरक्षित कर सकते हैं बल्कि समाज में एक अच्छा संदेश भी दे सकते हैं।

दिन-प्रतिदिन बढ़ते ट्रैफिक और दुर्घटनाओं के कारण लोग अपनी जान गवा रहे हैं उनकी सुरक्षा के लिए हमें सड़क सुरक्षा की ओर ध्यान देना जरूरी है। सड़क दुर्घटना आज के युवाओं के साथ सबसे अधिक घटित हो रही है क्योंकि युवा नशे का शिकार होकर दुर्घटना का कारण बनते हैं।

पिछले साल सड़क दुर्घटनाओं में औसतन हर घंटे सोलह लोग मारे गए। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, दुनिया के अट्ठाईस देशों में ही सड़क हादसों पर नियंत्रण की दृष्टि से बनाए गए कानूनों का कड़ाई से पालन होता है। इंसानों के जीवन पर मंडरा रहे मौत के तरह-तरह की डरावने हादसों एवं दुर्घटनाओं पर काबू पाने के लिये प्रतीक्षा नहीं, प्रक्रिया आवश्यक है। तेज रफ्तार से वाहन दौड़ाने वाले लोग सड़क के किनारे लगे बोर्ड़ पर लिखे वाक्य 'दुर्घटना से देर भली' पढ़ते जरूर हैं, किन्तु देर उन्हें मान्य नहीं है, दुर्घटना भले ही हो जाए।

सड़क पर चलने वाले लोगों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा कुछ नियम निर्धारित किये हैं जिन्हें हम सड़क सुरक्षा नियम के रूप में जानते हैं। सड़क पर जगह जगह पर निर्धारित गति तथा विभिन्न संकेत बनाए गये हैं। जिससे आगे की सड़क के बारे में ड्राईवर को सटीक जानकारी दी जा सके. मगर बहुत कम लोग इन नियमों का पालन करते हैं, अब समय आ गया है कि हमारी सरकार इस विषय में कठोर कानून बनाए तथा उसकी अवहेलना करने वालों के लिए कठोरतम सजा के प्रावधान किये जाए.

उपसंहार- सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने और जीवन को बचाने के लिए मजबूत प्रयासों के साथ विचार किया जाना चाहिए। हम रोज़ दफ्तर, स्कूल, कॉलेज और इत्यादि स्थानों पर जाने हेतु सड़क पर चलते हैं और एक तरफ से दूसरी तरफ सड़क पार करते हैं। सड़क पार करते वक़्त हमे कुछ ज़रूरी निर्देशों का पालन करना पड़ता है। सड़क के कुछ कायदे कानून है। अगर कोई भी इसका उल्लंघन करता है तो उसे निश्चित तौर पर जुर्माना भरना पड़ता या फिर कोई दुर्घटना घटती है।

(ग) युवा पीढ़ी और देश का भविष्य

भूमिका- हमेशा जोश और जुनून से सराबोर रहने वाली युवा पीढ़ी देश का भविष्य होती है। देश की युवा शक्ति ही समाज और देश को नई दिशा देने का सबसे बड़ा औजार है। वह अगर चाहे तो इस देश की सारी रूप-रेखा बदल सकती है। अपने हौसले और जज्बे से समाज में फैली विसंगतियों, असमानता, अशिक्षा, अपराध आदि बुराइयों को जड़ से उखाड़ फेंक सकती है। युवा शब्द ही मन में उडान और उमंग पैदा करता है। उम्र का यही वह दौर है जब न केवल उस युवा के बल्कि उसके राष्ट्र का भविष्य तय किया जा सकता है। आज के भारत को युवा भारत कहा जाता है क्योंकि हमारे देश में असम्भव को संभव में बदलने वाले युवाओं की संख्या सर्वाधिक है।

विषयवस्तु- युवा शक्ति वरदान है या चुनौती? अगर युवा शक्ति का सही दिशा में उपयोग न किया जाए तो इनका जरा सा भी भटकाव राष्ट्र के भविष्य को अनिश्चित कर सकता है। आंकड़ों के अनुसार भारत की 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष आयु तक के युवकों की और 25 साल उम्र के नौजवानों की संख्या 50 प्रतिशत से भी अधिक है। एक ओर वह अपने कैरियर को बेहतर दिशा देने के लिए संघर्षरत है, कड़ी मेहनत करती है और जोश, जुनून, दृढ़ संकल्प, इच्छाशक्ति से अपने लक्ष्य को पाने का हौसला रखती है वहीं कुछ युवा नशा, वासना, लालच, हिंसा के कर्म में शामिल हो गए हैं। पैसे वालों के लिए एडवेंचर और मनोरंजन जीवन का मुख्य ध्येय बन रहे हैं और उनकी देखादेखी विपन्न युवा भी यही आकांक्षा पाल बैठा है। स्वामी विवेकानंद युवाओं से बहुत प्यार करते थे। वे कहा करते थे विश्व मंच पर भारत की पुनर्प्रतिष्ठा में युवाओं की बहूत बड़ी भूमिका है। **विवेकानंद का मत था- मंदिर जाने से ज्यादा जरूरी है युवा फुटबॉल खेले।** युवाओं के स्नायु फौलादी होना चाहिए क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है। दुर्भाग्य से आज अधिसंख्य लोगों के जीवन से खेल-कूद, व्यायाम दूर होते जा रहे हैं। आज तो पूरे-पूरे दिन ही मोबाइल, इंटरनेट, फेसबुक, व्हाट्स एप, ट्विटर आदि युवाओं को व्यस्त रखते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारा युवा इस देश की परिस्थियों ठीक से समझे। विगत 75 वर्षों में जहाँ भारतीय लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हुईं, वहीं राजनीति में कई तरह की विकृतियाँ भी घर करती गईं। युवा वर्ग प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से इस विकृति से अत्यधिक प्रभावित हुआ है। आजादी मिलने के बाद के गत साढ़े छह दशकों से अधिक का ये सफरनामा कई कड़वे-मीठे अनुभवों और अच्छी-बुरी घटनाओं का संयोग रहा है। लगभग 25 फीसदी आबादी गरीबी रेखा से नीचे गुजर-बसर कर रही है। जाहिर है आज समाज और सरकार को समरसता और नागरिकों के गरिमापूर्ण जीवन-यापन के नैसर्गिक अधिकार को सुरक्षित रखने के लिए लगातार प्रयास करने की जरूरत है। लेकिन हम देख रहे हैं कि अधिसंख्य नागरिकों का जीवनस्तर अभी भी बहुत दयनीय अवस्था में है। कानून व्यवस्था एक बहुत बड़ी चुनौती है हमारे सामने। अपराध लगातार बढ़ रहे हैं। विवेकहीनता पैदा हो रही है। मनुष्य आज समाज के बारे में नहीं सोच रहा है वह सिर्फ और सिर्फ व्यक्तिगत स्वार्थ और सुख-सुविधाओं के लिए कर्म करता है। राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी के कारण देश में भ्रष्टाचार जैसी बुराइयां बढ़ रही हैं। युवा वर्ग इस सबसे अनजान नहीं है लेकिन वह इस स्थिति को बदलने का प्रयत्न करता नहीं दिखाई देता। भारत एक बहुत ही असाधारण लोकतंत्र है, जिसकी कुछ बहुत ही मजबूत लोकतांत्रिक विशेषताएँ हैं वहीं कुछ बहुत ही अलोकतांत्रिक विशेषताएँ भी हैं। कुल मिलाकर देखा जाए तो लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ-साथ तमाम तरह की मुश्किलें ही आजाद भारत को एक असाधारण लोकतंत्र बनाती हैं।

उपसंहार- आज के युवा को अपनी उन्नति और प्रगति के साथ इस भारत का नक्शा बदलने का संकल्प लेना होगा तभी यह भारत दुनिया का सिरमौर बन सकेगा। तेज रफ्तार आर्थिक विकास के बावजूद भारत की 22 फीसदी से ज्यादा आबादी अब भी गरीबी रेखा से नीचे गुजर-बसर कर रही है। युवाओं को इन स्थितियों को समझना होगा। समाज और देश निर्माण में अपना योगदान करना होगा। देश सीमा रेखा भर तो नहीं होता। हम सच्चे अर्थों में तभी आजादी का आनंद ले पाएंगे।

प्रश्न-2 इन दिनों टेलीविजन पर अश्लील कार्यक्रमों की बाढ़-सी आ गई है। उन कार्यक्रमों पर रोक लगाने हेतु दूरदर्शन के महानिदेशक को पत्र लिखिए। 5

दिनांक-25 अप्रैल, 2021

सेवा में,

महानिदेशक,

दूरदर्शन केंद्र, अशोक भवन,

नई दिल्ली।

विषय- टेलीविजन पर अश्लील कार्यक्रमों पर रोक लगाने के संबंध में।

महोदय,

आपसे विनम्र निवेदन है कि मैं अंबाला जिले के दिनारपुर का रहने वाला हूँ। इन दिनों दूरदर्शन पर अश्लील कार्यक्रमों की बाढ़-सी आ गई है । देह दिखाऊ फिल्मों, धारावाहिकों और मनोरंजन वाले कार्यक्रमों का स्तर इतना गिर गया है कि किसी भी कार्यक्रम को परिवार के लोग साथ देखने में शर्म महसूस होती है। कम उम्र के बच्चों के लिए टेलीविजन अभिशाप बन गया है। एक दौर था जब लोग टेलीविजन देखने के लिए जमा हो जाते थे। दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों की हर प्रशंसा होती थी। लेकिन आज हालत बद से बदतर होती जा रही है।

आपसे निवेदन है कि आप इस दिशा में कुछ ठोस कदम उठाएँ ताकि दूरदर्शन पर अश्लील कार्यक्रमों का प्रसारण बिल्कुल न हो सके। दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के प्रति लोगों विश्वास पैदा हो सके और लोग बेझिझक मनोरंजन कर सकें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप जनहित को ध्यान में रखते हुए उचित निर्णय लेंगे। मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा।

धन्यवाद।

भवदीय

रामप्रकाश

47, दिनारपुर

अंबाला (हरियाणा)।

दूरभाष – 9800004411

अथवा

पेड़ों के अंधाधुंध कटाव से मौसम चक्र में अचानक हो रहे बदलावों की चर्चा करते हुए किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

दिनांक-25 अप्रैल, 2021

सेवा में,

संपादक,

दैनिक भास्कर, मानस भवन,

मोहाली, पंजाब।

विषय- पेड़ों के अंधाधुंध कटाव से मौसम चक्र में परिवर्तन।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि मैं आपके लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र 'दैनिक भास्कर' का नियमित पाठक हूँ । इस समाचार पत्र में प्रकाशित सारगर्भित लेख और सम-सामयिक विषयों का विश्लेषण अत्यधिक ज्ञानवर्धक होता है। आपके समाचार पत्र के माध्यम से मैं भी पेड़ों के अंधाधुंध कटाव से मौसम चक्र में होने वाले परिवर्तन से आम जनता को अवगत कराना चाहता हूँ । आज लोग अपनी जरूरतों को अधिक महत्त्व देते हुए दिनोंदिन पेड़ों की अंधाधुंध कटाई करते जा रहे हैं जिससे धरती की हरियाली खत्म होती जा रही है। वे इस बात से अनजान हैं कि इसका सबसे ज्यादा बुरा असर तमाम जीव-जंतुओं के साथ-साथ मानव जीवन पर भी पड़ता है। लगातार हो रही पेड़ों की कटाई से मौसम चक्र बदल-सा गया है। जब बारिश होनी चाहिए तब बारिश नहीं और जब ठंड होनी चाहिए तब गर्मी से बेहाल हैं। इसी तरह से अधिक गर्मी पड़ना या बादल फट पड़ना या अत्यधिक ठंड होना। ये सब पेड़ों की हो रही अनवरत कटाई का ही परिणाम है। समय रहते सभी को समझ जाना चाहिए कि अब बहुत हो चुका है। अन्यथा वो दिन दूर नहीं जब लोग अपने कर्मों की विनाशलीला देखेंगे।

अत: आपसे निवेदन है कि आप मेरे उक्त विचार को अपने समाचार पत्र में के जनवाणी पृष्ठ पर प्रकाशित करने का कष्ट करें ताकि लोगों तक अच्छा सन्देश पहुँच सके। आशा करता हूँ कि आप मेरे पत्र पर अवश्य विचार करेंगे। मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा।

धन्यवाद।

भवदीय

राजबली

52, मोहाली (पंजाब)

दूरभाष –9100334411

प्रश्न-3 (क) कहानी से क्या आशय है? इसके मुख्य तत्वों के नाम लिखिए। 3

उत्तर- कहानी गद्य साहित्य की वह सबसे अधिक रोचक एवं लोकप्रिय विधा है जो जीवन के किसी विशेष पक्ष का मार्मिक, भावनात्मक और कलात्मक वर्णन करती है। साहित्य की सभी विधाओ में कहानी सबसे पुरानी विधा है। जनजीवन में यह सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है। प्राचीन काल में कहानियों को कथा, आख्यायिका, गल्प आदि कहा जाता था। वर्तमान दौर में भी कहानी सबसे अधिक प्रचलित है। साहित्य में यह अब अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी है। पुराने समय मे कहानी का मतलब था उपदेश देना या मनोरंजन करना। आज इसका लक्ष्य मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं और संवेदनाओ को व्यक्त करना है। यही कारण है कि प्राचीन काल की कहानी से आज की कहानी बिल्कुल भिन्न हो गयी है।

कहानी के निम्नलिखित छह तत्व होते हैं- 1-कथावस्तु 2-चरित्र-चित्रण 3-कथोपकथन 4-देशकाल 5-भाषा-शैली 6-उद्देश्य

अथवा

नाटक का क्या अर्थ है? किन्हीं दो प्रसिद्द नाटकों के नाम लिखिए।

उत्तर- नाटक नट शब्द से बना है जिसका आशय है- सात्त्विक भावों का अभिनय। नाटक दृश्य काव्य के अंतर्गत आता है। इसका प्रदर्शन रंगमंच पर होता है। भारतेंदु हरिशचन्द्र ने नाटक के लक्षण देते हूए लिखा है- नाटक शब्द का अर्थ नट लोगों की क्रिया है। दृश्य-काव्य की संज्ञा-रूपक है। रूपकों में नाटक ही सबसे मुख्य है इससे रूपक मात्र को नाटक कहते है। हिन्दी मे नाटक लिखने का प्रारंभ पद्म के द्वारा हूआ। लेकिन आज के नाटकों मे गद्य की प्रमुखता है। नाटक गद्य का वह कथात्मक रूप है, जिसे अभिनय संगीत, नृत्य, संवाद आदि के माध्यम से रंगमंच पर अभिनीत किया जा सकता है।

दो प्रसिद्ध नाटकों के नाम- अंधेर नगरी- भारतेंदु हरिश्चंद्र, ध्रुवस्वामिनी- जयशंकर प्रसाद।

प्रश्न-3 (ख) रेडियो नाटक की अवधि छोटी क्यों रखी जाती है? 2

उत्तर- रेडियो एक श्रव्य माध्यम है। वर्तमान में रेडियो नाटक एक स्वतंत्र विधा के रूप में आकर ले रहा है। इसका रसास्वादन सिर्फ ध्वनियों के सहारे लिया जाता है। इसमें हम पात्रों को देख नहीं पाते हैं बल्कि उन्हें सुनते हैं। जिन्हें याद रख पाना बहुत मुश्किल होता है। इसलिए रेडियो नाटक की अवधि छोटी रखी जाती है। आम तौर पर रेडियो नाटक दस से पंद्रह मिनट का होता है।

अथवा

कहानी में भाषा-शैली का क्या महत्व है?

उत्तर- कहानी में कलात्मकता लाने के लिए लेखक देशकाल के अनुसार अलग-अलग भाषा व शैली से उसे सजाता है। भाषा भावों की अभिव्यक्ति का साधन होती है। कहानी जनसामान्य की विधा है इसलिए कहानी की भाषा ऐसी होनी चाहिए जो सरल, सजीव और प्रवाहपूर्ण हो। सफल भाषा वही होती है जो कहानी के कथानक, और पात्र-योजना के अनुसार हो और शैली वातावरण के अनुकूल हो।

प्रश्न-4 (क) समाचार से क्या आशय है तथा समाचार की भाषा कैसी होनी चाहिए? 3

उत्तर- कोई भी घटना स्वयं में समाचार नहीं है बल्कि उस घटना का वह विवरण जो जनसंचार के साधनों समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन या इंटरनेट के द्वारा लोगों तक पहूंचता है, वह समाचार कहलाता है। समाचार सम- सामयिक घटनाओं, समस्याओं और विचारों पर आधारित होते हैं जिन्हें जानने की अधिक से अधिक लोगों में दिलचस्पी होती है और जिनका अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ता है। समाचार की भाषा दैनिक बोल- चाल भाषा होनी चाहिए। समाचारों में कठिन भाषा का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। सरल और स्पष्ट शब्दावली, छोटे वाक्य और संक्षिप्त पैराग्राफ का समाचार को पठनीय बनाते हैं। समाचार लिखते समय इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि भले ही समाचार के पाठक या श्रोता लाखों हों लेकिन वास्तविक रूप से एक व्यक्ति अकेले ही इस समाचार का उपयोग करेगा।

अथवा

पत्रकारीय लेखन आप क्या समझते है? किन्हीं दो प्रकारों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- अखबार पाठकों को सूचना देने, उन्हें जागरूक और शिक्षित बनाने तथा उनका मनोरंजन करने का दायित्व निभाते हैं। लोकतांत्रिक समाज में वे एक पहरेदार, शिक्षक और जनमत निर्माता के तौर पर बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अपने पाठकों के लिए वे बाहरी दुनिया में खुलने वाली ऐसी खिड़की हैं, जिनके जरिये असंख्य पाठक हर रोज सुबह देश-दुनिया और अपने पास-पड़ोस की घटनाओं, समस्याओं, मुद्दों तथा विचारों से अवगत होते हैं। अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के जिन विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं। उसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं। फीचर, आलेख, विशेष लेखन इत्यादि पत्रकारीय लेखन के अंतर्गत आते हैं।

प्रश्न-4 (ख) समाचार लेखन में शीर्षक की क्या भूमिका होती है? 2

उत्तर- समाचार को आकर्षक बनाने में शीर्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। पाठकों को समाचार की ओर आकर्षित करने में शीर्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शीर्षक के द्वारा किसी समाचार को रोचक बनाया जा सकता है। कभी कभी एक बहुत अच्छा समाचार उचित शीर्षक के अभाव में पाठकों का ध्यान आकर्षित नहीं कर पाता है। दूसरी बात यह है कि कुछ लोग केवल समाचारों के शीर्षक पढ़ने के आदी होते हैं और वे इसी आधार पर ही समाचार के बारे में निर्णय ले लेते हैं।

अथवा

रेडियो समाचार की भाषा की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- रेडियो आम आदमी के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। भारत जैसे विकासशील देश में उसके श्रोताओं में पढ़े-लिखे लोगों से निरक्षर तक और मध्यम वर्ग से लेकर किसान-मजदूर तक सभी होते हैं। इन सभी लोगों की सूचना की जरूरतें पूरी करना ही रेडियो का उद्देश्य है। जाहिर है कि लोगों तक पहुँचने का माध्यम भाषा है और इसलिए भाषा ऐसी होनी चाहिए कि वह सभी की समझ में आसानी से आ सके। भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।

(पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 तथा पूरक पाठ्य पुस्तक वितान भाग-2) 20 अंक

प्रश्न-5 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3X2=6

(क) 'उषा' कविता में भोर के नभ के पल-पल परिवर्तित रूप का चित्रण है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- सूर्योदय से पहले आकाश का रंग शंख जैसा नीला था , उसके बाद आकाश राख से लीपे चौके जैसा हो गया। सुबह की नमी के कारण वह गीला प्रतीत होता है। सूर्य की प्रारंभिक किरणों से आकाश ऐसा लगा मानो काली सिल पर थोड़ा लाल केसर डालकर उसे धो दिया गया हो या फिर काली स्लेट पर लाल खड़िया मिट्टी मल दी गई हो। सूर्योदय के समय सूर्य का प्रतिबिंब ऐसा लगता है जैसे नीले स्वच्छ जल में किसी गोरी युवती का प्रतिबिंब झिलमिला रहा हो।

(ख) भाई के शोक में डूबे श्रीराम का विलाप लक्ष्मण के प्रति उनके प्रेम भाव को दर्शाता है, कैसे?

उत्तर- लक्ष्मण के मुर्च्छित होने पर राम को जिस तरह से विलाप करते दिखाया गया है उससे श्रीराम का लक्ष्मण के प्रति उनके प्रेम भाव को दर्शाता है। वह ईश्वरीय लीला की बजाय आम व्यक्ति का

विलाप अधिक लगता है। राम ने विलाप करते समय कई ऐसी बातें कही हैं जिससे उनका अपने भाई लक्ष्मण के प्रति प्रेम व्यक्त होता है। जैसे- यदि मुझे तुमसे विछड़ने का पहले पता होता तो मैं तुम्हें अपने साथ वन में नहीं लाता। मैं अयोध्या जाकर परिवारजनों को क्या मुँह दिखाऊँगा, माता सुमित्रा को क्या जवाब दूँगा आदि। श्रीराम स्वयं को लक्ष्मण के बिना अधूरा समझते हैं। इन सब बातों से पता चलता है कि श्रीराम को अपने भाई लक्ष्मण से गहरा लगाव है।

(ग) फ़िराक की गजल में अपना परदा खोलने से क्या आशय है?

उत्तर- शायर सांसारिक लोगों की निंदक प्रवृत्ति का वर्णन करते हुए कहता है कि संसार में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो दूसरे की बुराई करने में आनंद की अनुभूति करते हैं, उन्हें हर इंसान में कमियाँ ही नजर आती हैं। लेकिन वास्तव में वे यह भूल जाते हैं कि दूसरों की निंदा या बुराई करते समय वे अपने बुरे होने का रहस्य खुद खोल रहे होते हैं, इसकी खबर उन्हें नहीं हो पाती है। एक तरह से शायर निंदा करने वालों को सावधान करना चाहता है कि किसी दूसरे की बुराई करना गलत है क्योंकि कमियाँ हर इंसान में होती हैं। कहा भी गया है-

बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलिया कोय।
जो तन खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।

प्रश्न 6 निम्नलिखित चार प्रश्नों में से **किन्हीं तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3X3=9

(क) डॉ भीमराव आम्बेडकर के आदर्श समाज की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- डॉ भीमराव आम्बेडकर ने अपने आदर्श समाज की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि उनका आदर्श बिल्कुल अलग तरह का है। उनका आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता पर आधारित होगा। जिस तरह से आवागमन, जीवन की सुरक्षा, संपत्ति, जीविकोपार्जन के लिए जरूरी औजार व सामग्री रखने के अधिकार की स्वतंत्रता पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होती उसी तरह मनुष्य के सक्षम व प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए लोगों को तैयार रहना चाहिए। मनुष्य वंश परंपरा, सामाजिक उत्तराधिकार और स्वयं के प्रयत्न की दृष्टि से समान नहीं होते। इन तीनों कारणों से व्यक्ति के साथ असमानता का व्यवहार करना अनुचित है। स्वयं के प्रयत्न के आधार पर असमान व्यवहार उचित है, परंतु अन्य दो के आधार पर असमानता का व्यवहार अनुचित है। हर व्यक्ति को विकास करने का अवसर मिलना चाहिए। उनका कहना था कि भ्रातृता अर्थात भाईचारे पर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता तो होनी ही चाहिए कि जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। इसके लिए व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देनी होती है।

(ख) नमक ले जाने के संबंध में साफिया के मन में क्या द्वंद्व चल रहा था?

उत्तर-नमक की पुड़िया ले जाने के संबंध में सफ़िया के मन में द्वंद्व चल रहा था कि वह नमक की पुड़िया को चोरी से छिपाकर ले जाए या कस्टम अधिकारियों को दिखाकर ले जाए। पहले वह इसे कीनुओं की टोकरी में सबसे नीचे रखकर कीनुओं से ढँक लेती है। फिर वह निर्णय करती है कि वह प्यार के इस तोहफ़े को चोरी से नहीं ले जाएगी। वह नमक की पुड़िया को कस्टम वालों को दिखाएगी।

अगर कस्टम वाले पकड़ लेंगे तो क्या होगा? वह नमक नहीं ले जा पाएगी। वह उसे छोड़ देगी। लेकिन उस वादे का क्या होगा जो उसने अपनी माँ (सिख बीबी) से किया था। वह अपने सैयद या पठान समझती है। उसका ध्यान उन कहानियों की ओर भी जाता है जिसमें कोई शहजादा अपनी रान में हीरे-जवाहरात छिपाकर ले जाता था। अंत में वह नमक ले जाने का फैसला करती है।

(ग) हैजा और मलेरिया से पीड़ित गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के समय के दृश्य का वर्णन 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर कीजिए।

उत्तर- हैजा और मलेरिया से पीड़ित गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के समय के दृश्य में बहुत अंतर होता था। सूर्योदय होते ही लोग काँखते-कूँखते और कराहते अपने घरों से बाहर निकलकर अपने पड़ोसियों व आत्मीयों को ढाँढस देते थे। इस प्रकार उनके चेहरे पर चमक बनी रहती थी। वे आपस में मिलकर हाल-समाचार पूछते थे और एक-दूसरे का हौसला बढ़ाते थे। किन्तु, सूर्यास्त होते ही सभी लोग अपनी-अपनी झोपड़ियों में घुस जाते थे। उस समय वे चूँ तक नहीं करते थे। उनके बोलने की शक्ति भी जाती रहती थी। यहाँ तक कि माताओं में दम तोड़ते पुत्र को अंतिम बार 'बेटा!" कहकर पुकारने की हिम्मत भी नहीं होती थी। रात का डरावनापन बढ़ जाता था। ऐसे समय में पहलवान की ढोलक की आवाज रात्रि की विभीषिका को चुनौती देती रहती थी।

(घ) डॉ भीमराव आम्बेडकर जाति व्यवस्था के पोषकों के विचारों से क्यों नहीं सहमत हैं?

उत्तर- जाति व्यवस्था के पोषक सभ्य समाज की स्थापना और कार्य की कुशलता के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानते हैं। किन्तु डॉ. भीमराव आम्बेडकर उनके विचारों से सहमत नहीं हैं। जाति-प्रथा से से केवल श्रम का ही विभाजन नहीं होता बल्कि इससे श्रमिकों का भी विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन हो जाता है। इससे लोगों में ऊँच-नीच की भावना जन्म लेती है। जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान भी लिया जाए तो यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। जाति-प्रथा में यह दोष है कि इसमें मनुष्य का पेशा उसके प्रशिक्षण या उसकी निजी क्षमता के आधार पर न करके उसके माता-पिता के सामाजिक स्तर से किया जाता है। यह मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है। पेशा बदलने की अनुमति न होने के कारण कई बार बेरोजगारी एवं भुखमरी की समस्या का सामना करना पड़ता है।

प्रश्न 7 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) ऐन फ्रैंक का जन्म 12 जून, 1929 को जर्मनी के फ्रैंकफ़र्ट शहर में हुआ था। ऐन ने अपने जीवन में नाजीवादियों की कठोर यातना को सहा। ऐन की मृत्यु फरवरी या मार्च, 1945 में नाजियों के यातनागृह में हुई। ऐन ने अपनी डायरी सन 1942 से 1944 के बीच अज्ञातवास के दौरान लिखी। ऐन ने अपनी इस डायरी की प्रत्येक चिट्ठी अपनी निर्जीव गुडिया 'किट्टी' को संबोधित करके लिखी। अकेलापन ही ऐन फ्रैंक के डायरी लेखन का कारण बना। यद्यपि अपने परिवार और वान दंपत्ति के साथ अज्ञातवास में दो वर्षों तक रही लेकिन इस दौरान किसी ने उसकी भावनाओं को समझने का प्रयास नहीं किया। पीटर यद्यपि उससे प्यार करता है लेकिन केवल दोस्त की तरह। माता-पिता और बहन ने भी कभी उसकी

भावनाओं को गंभीरता से नहीं समझा। उसे कभी कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो उसकी भावनाओं को समझता। उसके बारे में सोचता और उसके दुख-सुख के बारे में उससे बातें करता। यही कारण है कि वह अपनी चिट्ठियाँ अपनी निर्जीव गुड़िया को संबोधित करके लिखती है। 3

अथवा

मुअनजो-दड़ो सिंधु घाटी की सभ्यता की जुड़वाँ राजधानियों में से एक है। वहाँ के अवशेषों को देखने से उस समय की वास्तुकला का सुंदर नमूना प्रस्तुत होता है । अतीत में बसा सुंदर सुनियोजित नगर वहाँ की उत्कृष्टता को स्वयं ही बयाँ करता है। वहाँ की सड़कें , नालियाँ, स्तूप, सभागार, अन्नागार, विशाल स्नानागार, कुएँ, जलकुंड और अनुष्ठान गृह आदि के अतिरिक्त मकानों की सुव्यवस्था देखकर ऐसा लगता है जैसे लोग अब भी हैं। वहाँ सड़क पर जाती हुई बैलगाड़ी की रुनझुन सुनाई देती है। किसी खंडहर में प्रवेश करते हुए वहाँ के निवासियों की उपस्थिति महसूस होती है। रसोईघर की खिड़की से झाँकने पर पक रहे भोजन की गंध भी आती है। महाकुंड के उत्तर-पूर्व में लंबी इमारत के अवशेष मिले हैं। इसके बीच में खुला बड़ा दालान है तथा तीन तरफ बरामदे हैं। इसे कॉलेज ऑफ़ प्रीस्ट्स माना जाता है। दक्षिण में बीस खंभों वाला एक हाल है जो शायद राज्य सचिवालय , सभा-भवन या सामुदायिक केंद्र रहा होगा। वहाँ की एक-एक चीज सुनियोजित और उत्कृष्ट है। वहाँ के निवासियों और उनके क्रियाकलापों से मुअनजो-दड़ो की वास्तुकला का परिचय मिलता है। लेखक वहाँ की एक-एक स्थूल चीज को देखर चकित रह जाता है। अत: कहा जा सकता है कि मोहनजोदड़ों की सभ्यता की वास्तुकला ही उसका प्राण है।

(ख) ऐन फ्रैंक ने अपनी डायरी में महिला अधिकारों का समर्थन किया है। समाज में महिलाओं के दयनीय स्थिति के लिए वह पुरुष वर्चस्व को दोषी मानती है और इसे महिलाओं के साथ अन्याय मानती है। उसका मानना है कि शारीरिक अक्षमता व आर्थिक कमजोरी के बहाने पुरुषों ने महिलाओं को घर में बाँधकर रखा है। कोई स्त्री कितने बच्चे को जन्म दे या फिर न दे इस पर उसका स्वयं का निर्णय होना चाहिए। ऐन चाहती है कि महिलाओं को पुरुषों के बराबर सम्मान मिले क्योंकि समाज के निर्माण में उनका भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। बच्चे को जन्म देने पर महिलाओं का सम्मान उसी तरह होना चाहिए जैसा किसी जंग को जीतने पर पुरुषों का होता है। 2

अथवा

मुअनजो-दड़ो खुदाई स्थल के वीरान शहर को घूमते समय लेखक को एकाएक राजस्थान के जैसलमेर में स्थित गाँव कुलधरा की याद आ गई। कुलधरा पीले पत्थर के घरों वाला एक सुंदर गाँव है। यह गाँव भी काफी समय से वीरान है। कोई डेढ़ सौ साल पहले राजा से तकरार पर गाँव के स्वाभिमानी लोग रातों-रात अपना घर छोड़कर चले गए और बाद में दरवाजे, खिड़कियाँ तथा माल-असबाब चोर उठा के गए। उस गाँव के मकान खंडहर हो गए , पर ढहे नहीं हैं। वे आज भी अपने निवासियों की प्रतीक्षा में खड़े लगते हैं। ठीक उसी तरह मुअनजो-दड़ों भी लेखक को दिखाई पड़ रहा था।

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 2021-22

विषय - हिंदी (आधार)

विषय कोड - 302 / सत्र - 2 (2)

कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समय : 2 घंटे अधिकतम अंक : 40

सामान्य निर्देश : -

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए।
- इस प्रश्नपत्र में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।
- इस प्रश्नपत्र में कुल सात प्रश्न पूछे गए हैं। आपको सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- प्रश्नों में आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

(कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन) 20 अंक

प्रश्न-1 निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से **किसी एक** शीर्षक का चयन कर लगभग 150 शब्दों में एक रचनात्मक लेख लिखिए- 5X1=5

(क) ऑनलाइन खरीददारी का बढ़ता चलन

(ख) बाल मजदूरी की समस्या और निदान

(ग) भारत : सबसे प्यारा देश हमारा

प्रश्न-2 अभिभावकों के सामने प्राथमिक कक्षाओं में अपने बच्चों के प्रवेश को लेकर चुनौतियाँ हैं। इस समस्या की जानकारी देते हुए शिक्षा निदेशक को पत्र लिखिए। 5X1=5

अथवा

कोविड-19 महामारी के संक्रमण से बचने के लिए मास्क लगाना जरुरी है। लेकिन कई लोग लापरवाही करते हुए इस नियम का पालन नहीं करते हैं। इस पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

प्रश्न-3 (क) कहानी का क्या अर्थ है? इसके मुख्य रूप से कितने भेद हैं?? 3X1=3

अथवा

नाटक का क्या आशय है? इसमें संकलनत्रय का क्या महत्त्व होता है?

प्रश्न-3 (ख) रेडियो नाटक का क्या मतलब होता है इसमें मुख्य रूप से किनका संयोजन होता है? 2X1=2

अथवा

कहानी में कथानक की क्या भूमिका होती है?

प्रश्न-4 (क) पत्रकार किसे कहते हैं? ये कितने तरह के होते हैं? 3X1=3

अथवा

विशेष लेखन का क्या अर्थ है? यह कैसे लिखा जाता है?

प्रश्न-4 (ख) समाचार के मुख्य तत्वों के विषय में बताइए। 2X1=2

अथवा

उल्टा पिरामिड शैली से आप क्या समझते हैं?

(पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 तथा पूरक पाठ्य पुस्तक वितान भाग-2) 20 अंक

प्रश्न-5 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3X2=6

(क) 'उषा' कविता में गौर झिलमिल देह किसकी है? आशय स्पष्ट कीजिए।

(ख) पेट की आग बुझाने के लिए लोग क्या-क्या कर्म करते हैं? तुलसी के समय बात क्या आज भी प्रासंगिक है?

(ग) फ़िराक की गजल के पहले शेर में प्रकृति के सौन्दर्य का कैसा चित्रण है?

प्रश्न 6 निम्नलिखित चार प्रश्नों में से **किन्हीं तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3X3=9

(क) डॉ. आम्बेडकर ने समाज में श्रम विभाजन को क्यों नहीं उचित माना है?

(ख) 'नमक' कहानी में सिख बीबी ने कीर्तन में किस विषय पर सबसे ज्यादा बात की? वहाँ से जाते समय उन्होंने साफिया से क्या मँगाया और क्यों?

(ग) बाबा भीमराव आम्बेडकर के अनुसार उनकी कल्पना का आदर्श समाज कैसा होना चाहिए? अपने शब्दों में अभिव्यक्त करें।

(घ) नए राजकुमार के शासन संभालते ही राज्य में क्या-क्या परिवर्तन हुए और लुट्टन पहलवान पर इसका क्या असर हुआ?

प्रश्न 7 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3X1=3

(क) ऐन फ्रैंक की डायरी द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यहूदियों पर ढाए गए जुल्मों का जीवंत दस्तावेज़ है। इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?

अथवा

मोहनजोदड़ों की सभ्यता नगर नियोजन का अप्रतिम उदाहरण है। इस कथन का तर्क सहित उत्तर दीजिए।

(ख) ऐन फ्रैंक की डायरी से पता चलता है कि यह एक परिपक्व और समझदार लड़की के विचारों की डायरी है। डायरी के पन्ने पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। 2X1=2

अथवा

सिन्धु सभ्यता के महाकुंड का सामाजिक और धार्मिक महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 2021-22
विषय - हिंदी (आधार)
विषय कोड - 302 / सत्र - 2 (2)
कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समय : 2 घंटे अधिकतम अंक : 40

सामान्य निर्देश : -

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए।
- इस प्रश्नपत्र में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।
- इस प्रश्नपत्र में कुल सात प्रश्न पूछे गए हैं। आपको सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- प्रश्नों में आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

(कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन) 20 अंक

प्रश्न-1 निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से **किसी एक** शीर्षक का चयन कर लगभग 150 शब्दों में एक रचनात्मक लेख लिखिए- 5

(क) ऑनलाइन शॉपिंग का बढ़ता चलन

भूमिका- ऑनलाइन शॉपिंग एक उभरती हुई ई-कॉमर्स तकनीक है। इससे आसान और क्या हो सकता है जब आपको एक समय में सीमित उत्पादों की पेशकश करने वाले बाजारों की भीड़ का सामना न करना पड़े। यह ऑनलाइन शॉपिंग है, जिससे खरीदारी करने का तरीका आसान और अधिक सुविधाजनक हो जाता है। विक्रेता उत्पाद विवरण ऑनलाइन अपलोड कर रहे हैं जिसे वेबसाइट को ब्राउज़ करते समय आसानी से देखा जा सकता है। ऐसी कई वेबसाइटें हैं जिन तक पहुंच काफी आसान है।

विषयवस्तु- ऑनलाइन शॉपिंग में इंटरनेट पर पैसों का लेनदेन या व्यवसाय शामिल है। खरीदार अपनी जरूरत के अनुसार वस्तु या उत्पाद का चुनाव करने के बाद इन्टरनेट के माध्यम से खरीदारी करता है। इसलिए प्रौद्योगिकी, डिजिटलाइजेशन के अवधारणा की ओर अग्रसर है। तकनीकी सहायता की मदद से सामान्य खरीदारी को एक नया चेहरा दिया गया है। खरीदारी के ऑफलाइन या पारंपरिक तरीकों को ऑनलाइन बनाकर उन्हें उन्नत कर दिया गया है। यह व्यापार रणनीति में एक सफल बदलाव है। इसे नए सिरे से विकसित करने और ज्यादा से ज्यादा मुनाफा या आर्थिक लाभ प्रदान करने के लिए नए विचारों और तरीकों को लागू किया गया है। ऑनलाइन शॉपिंग व्यापार रणनीति में बदलाव का परिणाम है इसलिए प्रतिस्पर्धा में मदद मिलती है। यह एक आसान, सुविधाजनक और बेहतर विकल्प साबित हो रहा है और इसलिए यह डिजिटलीकरण की अवधारणा का सबसे बेहतर उदाहरण है। सबसे पसंदीदा ऑनलाइन शॉपिंग साइट स्नैपडील, फ्लिपकार्ट, अमेज़ॅन, मिन्त्रा, अजियो, आदि हैं।

तकनीकी प्रगति हमारे मानकों और जीवनशैली को बदल रही है। तकनीक में दिन-प्रतिदिन बदलाव हो रहे हैं। ऑनलाइन शॉपिंग आकर्षक पहलू तकनीक में से एक है। यह वह विधि है जिसमें व्यापार और

लेनदेन इंटरनेट पर किए जाते हैं। ग्राहकों को विभिन्न वेबसाइटों पर वांछित उत्पाद और सेवाओं को खोजने और चुनने का विकल्प प्रदान किया जाता है और दूसरे छोर पर इसे निर्देशित पते पर वितरित किया जाता है। विक्रेता हमें कई अलग-अलग वेबसाइटें भी प्रदान कर रहे हैं जहाँ तमाम तरह के उत्पाद और सेवाएं मिल रहीं। इन दिनों लोगों को कई तरह के काम के दबावों से जूझना पड़ता है। वे अपना अधिकांश समय कार्यालयों या अन्य महत्वपूर्ण कामों में बिता रहे हैं। खरीदारी के पारंपरिक तरीकों के लिए, अलग-अलग उत्पादों के लिए, अलग-अलग स्टोर पर जाकर ज्यादा समय की खपत की आवश्यकता होती है। ऐसे में ऑनलाइन शॉपिंग आपके समय और प्रयास को बचाकर इस समस्या से निपटने का एक आसान तरीका प्रदान करता है।

उपसंहार- हम कह सकते हैं कि ऑनलाइन खरीदारी एक लोकप्रिय बिजनेस है। हम एक ही जगह पर बैठकर अपनी पसंद की चीजों को इन्टरनेट पर खोज सकते हैं। हम अपनी पसंद की वस्तुओं को पा सकते हैं और अपने दोस्तों तथा करीबियों को वही वस्तुएं उपहार में दे भी सकते हैं। ऑनलाइन खरीदारी ने सफलतापूर्वक पारंपरिक खरीदारी के दौरान होने वाले दबाव को कम कर दिया और निश्चित रूप से यह समय की बचत भी कराता है।

(ख) बाल मजदूरी की समस्या और निदान

भूमिका- बच्चे देश का भविष्य होते हैं। किन्तु देश के अधिकांश बच्चों का भविष्य अंधकार के गर्त में समा जाता है जब उनके खेलने, खाने और पढ़ने की उम्र में उनसे मजदूरी करवाई जाती है। 5 से 14 साल तक के बच्चों का अपने जीवन जीने के लिए नियमित काम करना बाल मजदूरी कहलाता है। विकासशील देशों मे बच्चे जीवन जीने के लिये बेहद कम पैसों पर अपनी इच्छा के विरुद्ध जाकर पूरे दिन कड़ी मेहनत करने के लिए मजबूर है। वे स्कूल जाना चाहते हैं, अपने दोस्तों के साथ खेलना चाहते हैं और दूसरे अमीर बच्चों की तरह अपने माता-पिता का प्यार और परवरिश पाना चाहते हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश उन्हें अपनी हर इच्छाओं का गला घोंटना पड़ता है।

विषयवस्तु- भारत में बाल मजदूरी बड़ा सामाजिक मुद्दा बनता जा रहा है जिसे नियमित आधार पर हल करना चाहिए। ये केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि इसे सभी सामाजिक संगठनों, मालिकों, और अभिभावकों द्वारा भी समाधित करना चाहिए। ये मुद्दा सभी के लिये है जोकि व्यक्तिगत तौर पर सुलझाना चाहिए, क्योंकि ये किसी के भी बच्चे के साथ हो सकता है। विकासशील देशों में, खराब स्कूलिंग मौके, शिक्षा के लिये कम जागरुकता और गरीबी की वजह से बाल मजदूरी की दर बहुत अधिक है। ग्रामीण क्षेत्रों में अपने माता-पिता द्वारा कृषि में शामिल 5 से 14 साल तक के ज्यादातर बच्चे पाए जाते है। पूरे विश्व में सभी विकासशील देशों में बाल मजदूरी का सबसे मुख्य कारण गरीबी और स्कूलों की कमी है। बचपन हर एक के जीवन का सबसे खुशनुमा और जरुरी अनुभव माना जाता है क्योंकि बचपन बहुत जरुरी और दोस्ताना समय होता है सीखने का। अपने माता-पिता से बच्चों को पूरा अधिकार होता है खास देख-रेख पाने का, प्यार और परवरिश का, स्कूल जाने का, दोस्तों के साथ खेलने का और दूसरे खुशनुमा पलों का लुफ्त उठाने का। बाल मजदूरी हर दिन न जाने कितने अनमोल बच्चों का जीवन

बिगाड़ रहा है। ये बड़े स्तर का गैर-कानूनी कृत्य है जिसके लिये सजा होनी चाहिये लेकिन अप्रभावी नियम-कानूनों से ये हमारे आस-पास चलता रहता है।

समाज से इस बुराई को जड़ से मिटाने के लिये कुछ भी बेहतर नहीं हो रहा है। कम आयु में उनके साथ क्या हो रहा है इस बात का एहसास करने के लिये बच्चे बेहद छोटे, प्यारे और मासूम है। वो इस बात को समझने में अक्षम है कि उनके लिये क्या गलत और गैर-कानूनी है, बजाए इसके बच्चे अपने कामों के लिये छोटी कमाई को पाकर खुश रहते है। अनजाने में वो रोजाना की अपनी छोटी कमाई में रुचि रखने लगते है और अपना पूरा जीवन और भविष्य इसी से चलाते है।

बाल मजदूरी एक वैशविक समस्या है जो विकासशील देशों में बेहद आम है। माता-पिता या गरीबी रेखा से नीचे के लोग अपने बच्चों की शिक्षा का खर्च वहन नहीं कर पाते है और जीवन-यापन के लिये भी जरुरी पैसा भी नहीं कमा पाते है। इसी वजह से वो अपने बच्चों को स्कूल भेजने के बजाए कठिन श्रम में शामिल कर लेते है। वो मानते है कि बच्चों को स्कूल भेजना समय की बरबादी है और कम उम्र में पैसा कमाना परिवार के लिये अच्छा होता है। बाल मजदूरी के बुरे प्रभावों से गरीब के साथ-साथ अमीर लोगों को भी तुरंत अवगत कराने की जरुरत है। उन्हें हर तरह की संसाधनों की उपलब्ता करानी चाहिये जिसकी उन्हें कमी है। अमीरों को गरीबों की मदद करनी चाहिए जिससे उनके बच्चे सभी जरुरी चीजें अपने बचपन में पा सके। इसको जड़ से मिटाने के लिये सरकार को कड़े नियम-कानून बनाने चाहिए।

उपसंहार- किसी भी राष्ट्र के लिये बच्चे नए फूल की शक्तिशाली खुशबू की तरह होते है जबकि कुछ लोग थोड़े से पैसों के लिये गैर-कानूनी तरीके से इन बच्चों को बाल मजदूरी के कुँएं में धकेल देते है साथ ही देश का भी भविष्य बिगाड़ देते है। ये लोग बच्चों और निर्दोष लोगों की नैतिकता से खिलवाड़ करते है। बाल मजदूरी से बच्चों को बचाने की जिम्मेदारी देश के हर नागरिक की है। ये एक सामाजिक समस्या है जो लंबे समय से चल रहा है और इसे जड़ से उखाड़ने की जरुरत है।

(ग) भारत : सबसे प्यारा देश हमारा

भूमिका- भारत सिर्फ एक शब्द नहीं है यह हर भारतीय के दिल की आवाज है। भारत एक देश है जहाँ पर हम सभी इसकी छत्रछाया में रहते हैं। राष्ट्र ही मनुष्य की सबसे बड़ी संपत्ति होती है। हर भारतीय भारत को अपनी माँ मानता है। जिस भूमि के अन्न-जल से मनुष्य का शरीर बनता है, विकसित होता है, राष्ट्र के लिए उसका अनायास प्रेम और राष्ट्र के प्रति श्रद्धा और लगाव उत्पन्न हो जाता है। सभी प्राणी अपनी जन्मभूमि से प्यार करते हैं और जिससे प्यार किया जाता है उसकी हर चीज में सौंदर्य दिखाई देता है। उसकी हर वस्तु प्रिय लगने लगती है। हमें भी अपने भारत से बहुत प्यार है और यहाँ की हर चीज में सुंदरता दिखाई देती है। हमारा भारत इतना पवित्र और गरिमामय है कि भगवान भी यहाँ पर जन्म लेने के लिए लालायित रहते हैं।

विषयवस्तु- हमारी जन्म भूमि भारत स्वर्ग से भी बढकर है। यहाँ पर बहुत से ऐसे स्थल है जो भारत के सबसे अधिक सुंदर स्थलों में गिने जाते हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत ने सातवाँ स्थान प्राप्त किया है और जनसंख्या में दूसरा स्थान प्राप्त किया है। हमारा भारत दुनिया के विकासशील देशों में से एक है।

हमारा भारत बहुत ही तेज गति से विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। हमारा भारत बहुत प्राचीन देश है। हमारे भारत का इतिहास स्वर्णिम रहा है। ऐसा भी एक समय था जब इसे सोने की चिड़िया के नाम से जाना जाता था। भारत देश धन और सौंदर्य से वषिभुत हुआ करता था। भारत ने ही ज्ञान की किरण पूरे संसार में फैलाई थी। ज्ञान के क्षेत्र में पूरा विश्व भारत का ऋणी है। इसी पर तो विज्ञान का ढांचा टिका हुआ है।

ज्ञान का भंडार होने की वजह से ही भारत को सोने की चिड़िया के नाम से जाना जाता था। भारत पर मुगलों और अंग्रेजों ने अपना राज्य स्थापित किया था और इसे लूटा था। हमारे देश ने हजारों वर्षों तक गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। भारत में अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया था जिन्होंने देश को सत्य और अहिंसा से परिचित कराया था। लेकिन हमारे वीर योद्धा और क्रांतिकारियों ने मिलकर भारत को 15 अगस्त, 1947 को आजाद करा लिया था जिसकी वजह से आज के समय में हमारा देश उन्नत और शक्तिशाली बनता जा रहा है।

भारत ने कई आक्रमणों को झेला लेकिन भारत रहा है और आगे भी रहेगा। भारत की कहानी भावनाओं से ओत-प्रोत है। इस भारत ने केवल कृष्ण को ही जन्म नहीं दिया था बल्कि इसने ऐसे अनेक महापुरुषों को जन्म दिया था जो हमेशा के लिए अमर हो गये हैं। यहाँ पर ऋतुएँ सही समय पर आती हैं और धरती को अपनी अनूठी छटाओं से सजाती हैं। आज भारत की विकास दर तेजी से बढ़ रही है। हमारे देश की सेनाएँ देश की रक्षा करने में संगलन है। स्वतंत्रता मिलने के बाद हिंदी को देश की राष्ट्र भाषा बनाया गया है। आजादी मिलने के बाद 26 जनवरी, 1950 को भारतीय संविधान लागू किया गया था और हमारा देश गणतंत्र हुआ था। रत्न और हीरों की खाने, कोयले के भंडार, लोहा और यूरेनियम धातुओं की गुफा हमारे भारत की मिटटी के नीचे छिपी हुई हैं। हमारा भारत एशिया महाद्वीप में तीन ओर से पानी से घिरा हुआ है। आज भारत विश्व की बहुत बड़ी आर्थिक शक्ति बन गया है।

उपसंहार- हमारे देश की संस्कृति बहुत ही अनोखी है। यहाँ अनेक प्रकार के फूलों से प्रकृति सुगंधित हो उठती है। हमारा देश भारत संसार का सर्वश्रेष्ठ देश है। यह एक बहुत ही प्राचीन देश है। यह देश अपनी भौगोलिक, सांस्कृतिक व प्राकृतिक विभिन्नताओं के कारण विश्वभर में अनूठा है। सचमुच हमारा देश संसार का सर्वश्रेष्ठ देश है। शायद इसलिए कवि इकबाल ने कहा था कि- "सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।"

प्रश्न-2 अभिभावकों के सामने प्राथमिक कक्षाओं में अपने बच्चों के प्रवेश को लेकर चुनौतियाँ हैं। इस समस्या की जानकारी देते हुए शिक्षा निदेशक को पत्र लिखिए। 5

दिनांक-25 दिसंबर, 2021

सेवा में,

शिक्षा निदेशक,

प्राथमिक शिक्षा परिषद,

विद्या भवन, लखनऊ (उ.प्र.)।

विषय- अभिभावकों के समक्ष प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के प्रवेश की समस्या के संबंध में।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि मेरा नाम बल्लभ सहाय है और मैं विशाल खंड, गोमती नगर, लखनऊ में रहता हूँ। विगत कुछ दिनों से नगर के कई अभिभावक प्राथमिक कक्षाओं में अपने बच्चों के प्रवेश की समस्या लेकर मेरे पास आ रहे हैं। उनका कहना है कि निजी विद्यालयों में छोटे बच्चों के लिए प्रवेश और मासिक शुल्क इतना अधिक है कि वे वहाँ अपने बच्चों के प्रवेश के विषय सोच भी नहीं सकते। एक अभिभावक ने बताया कि सरकारी विद्यालयों में इतने नियम-कानून और कागजात लगा रखे हैं कि उसके लिए भाग-दौड़ लगानी पड़ती है। लोग थक-हारकर अपने बच्चों का प्रवेश नहीं करा पाते हैं। जो अभिभावक अपने बच्चों का विद्यालय में प्रवेश नहीं करा पाते उनके बच्चे विद्यालयी शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। जबकि 6-14 वर्ष के बच्चों के लिए शिक्षा मौलिक अधिकार है।

अत: आपसे आग्रह है कि आप उन अभिभावकों की समस्याओं के बारे में अवश्य विचार करें जो अपने बच्चों का प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश नहीं करा पाते हैं। आशा करता हूँ कि आप मेरे पत्र पर अवश्य विचार करेंगे। मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा।

धन्यवाद।

भवदीय

बल्लभ सहाय

32, विशाल खंड, गोमती नगर (लखनऊ)

दूरभाष – 9122334455

अथवा

कोविड-19 महामारी के संक्रमण से बचने के लिए मास्क लगाना जरुरी है। लेकिन कई लोग लापरवाही करते हुए इस नियम का पालन नहीं करते हैं। इस पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

दिनांक-30 अप्रैल, 2021

सेवा में,

संपादक,

नवभारत टाइम्स,

लाल चौक, जयपुर।

विषय- कोविड-19 महामारी के संक्रमण से बचने के लिए मास्क लगाना जरुरी है।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि मैं आपके लोकप्रिय दैनिक समाचारपत्र 'नवभारत टाइम्स' का नियमित पाठक हूँ। इस समाचार पत्र में प्रकाशित मूल्यपरक लेख और ज्वलंत मुद्दों का विश्लेषण अत्यधिक ज्ञानवर्धक होता है। आपके समाचार पत्र के माध्यम से मैं ' कोविड-19 महामारी के संक्रमण से बचने के लिए मास्क लगाना जरुरी है' विषय से आम लोगों को जागरूक करना चाहता हूँ। जिस महामारी ने पूरी दुनिया में तबाही मचा दी है, अफ़सोस है कि कुछ लोग मौत का मंजर देखकर भी बड़े मजे से लापरवाही कर रहें हैं। ये लोग भीड़ भरी जगहों में बिना मास्क लगाए ही चले जाते हैं और अपने साथ-साथ दूसरों का जीवन जोखिम में डाल देते हैं। राष्ट्रीयता और देश-प्रेम की बड़ी-बड़ी बातें करने वाले लोग वास्तव में मास्क न लगाकर देश के दुश्मन बन रहे हैं। ऐसे लोग सामाजिक दूरी के नियम का पालन नहीं करते हैं। इन्हीं लोगों की लापरवाही से संक्रमण तेजी से फैलता है और सरकार को लॉकडाउन लगाना पड़ता है जिससे देश के अन्य लोगों को बहुत-सी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है।

अत: आपसे निवेदन है कि आप मेरे उक्त विचार को अपने समाचार पत्र में के 'लोकवाणी' पृष्ठ पर प्रकाशित करने का कष्ट करें ताकि लोगों तक मास्क लगाने का सन्देश पहुँच सके। आशा करता हूँ कि आप मेरे पत्र पर अवश्य विचार करेंगे। मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा।

धन्यवाद।

भवदीय

सन्तोष सुमन

32, परेरा हिल (जयपुर)

दूरभाष –9100334455

प्रश्न-3 (क) कहानी का क्या अर्थ है? इसके मुख्य रूप से कितने भेद हैं? 3

उत्तर- कहानी गद्य साहित्य की वह सबसे अधिक रोचक एवं लोकप्रिय विधा है जो जीवन के किसी विशेष पक्ष का मार्मिक, भावनात्मक और कलात्मक वर्णन करती है। साहित्य की सभी विधाओ में कहानी सबसे पुरानी विधा है। जनजीवन में यह सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है। प्राचीन काल में कहानियों को कथा, आख्यायिका, गल्प आदि कहा जाता था। वर्तमान दौर में भी कहानी सबसे अधिक प्रचलित है। साहित्य में यह अब अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी है। पुराने समय मे कहानी का मतलब था उपदेश देना या मनोरंजन करना। आज इसका लक्ष्य मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं और संवेदनाओ को व्यक्त करना है। यही कारण है कि प्राचीन काल की कहानी से आज की कहानी बिल्कुल भिन्न हो गयी है।

1-घटना प्रधान कहानी, 2-चरित्र प्रधान कहानी, 3-भावप्रधान कहानी, 4-वातावरण प्रधान कहानी और 5- मनोविश्लेषणात्मक कहानी

अथवा

नाटक का क्या आशय है? इसमें संकलनत्रय का क्या महत्त्व होता है?

उत्तर- नाटक नट शब्द से बना है जिसका आशय है- सात्त्विक भावों का अभिनय। नाटक दृश्य काव्य के अंतर्गत आता है। इसका प्रदर्शन रंगमंच पर होता है। नाटक काव्य का ही एक रूप है। जो रचना श्रवण द्वारा ही नहीं अपितु दृष्टि द्वारा भी दर्शकों के हृदय में रसानुभूति कराती है उसे नाटक या दृश्य-काव्य कहते हैं। नाटक में श्रव्य काव्य से अधिक रमणीयता होती है। दृश्य काव्य होने के कारण यह लोक चेतना से अपेक्षा कृत अधिक घनिष्ठ रूप से संबद्ध है।

संकलन त्रय अर्थात् स्थल, समय, काल की एकता। नाटक में कथा के युग के अनुसार हो और उसमें समाज और राजनीति की परिस्थितियों का अंकन किया गया हो। ऐतिहासिक नाटकों में तो इन तत्वों का निर्वाह अत्यंत अपरिहार्य है। सफल नाटककार दृश्य विधान, मंच-व्यवस्था वेषभूषा, अभिनय आदि के द्वारा सजीव वातावरण की सृष्टि कर लेता है।

प्रश्न-3 (ख) रेडियो नाटक में पात्रों का नाम क्यों लिया जाता है ? 2

उत्तर- रेडियो नाटक साहित्य की श्रव्य विधा के अंतर्गत आता है। इसके रसास्वादन के लिए पात्रों एवं ध्वनियों के बीच संयोजन किया जाता है। रेडियो नाटक में पात्रों का नाम लेकर पुकारा जाता है ताकि श्रोताओं को पात्रों के कार्य-व्यापार का पता चल सके। जैसे- लो रामदीन हुक्का पी लो।

अथवा

कहानी में कथानक की क्या भूमिका होती है?

उत्तर- कहानी के ढाँचे को कथानक अथवा कथावस्तु कहा जाता है। इसे कहानी का केंद्र माना जाता है। इसके अभाव में कहानी की रचना की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इसके भी चार अंग होते

हैं- आरम्भ, आरोह, चरम स्थिति तथा अवरोह। यह कहानी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है। इसके लिए वस्तु, विषयवस्तु, कथा तथा कथानक आदि समानार्थी शब्द हैं। अंग्रेजी के 'प्लाट 'तथा 'थीम 'शब्द इसी के पर्याय हैं। इस तत्व में कहानीकार अपने जीवन के अनुभवों को प्रस्तुत करता है।

प्रश्न-4 (क) पत्रकार किसे कहते हैं? ये कितने तरह के होते हैं? 3

उत्तर- देश-दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में घटित घटनाओं का संग्रह करके पाठकों अथवा के लिए समाचार के रूप में प्रस्तुत करने वाले को पत्रकार कहते हैं। पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं-1- पूर्णकालिक पत्रकार 2-अंशकालिक पत्रकार 3- फ्रीलांसर यानी स्वतंत्र पत्रकार।

पूर्णकालिक पत्रकार- किसी समाचार संगठन में नियमित रूप से कार्य करने वाले वेतनभोगी कर्मचारी को पूर्णकालिक पत्रकार कहते हैं। सेवा नियमावली के अनुसार इन्हें अन्य लाभ प्राप्त होते हैं।

अंशकालिक पत्रकार- इस श्रेणी के पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर एक निश्चित समयावधि के लिए कार्य करते हैं।

फ्रीलांसर पत्रकार- इस श्रेणी के पत्रकारों का संबंध किसी विशेष समाचार-पत्र से नहीं होता, बल्कि वे भुगतान के आधार पर अलग-अलग समाचार-पत्रों के लिए स्वतंत्र रूप से लिखते हैं।

अथवा

विशेष लेखन का क्या अर्थ है? यह कैसे लिखा जाता है?

उत्तर- सामान्य लेखन से हटकर किसी खास विषय अथवा मुद्दों पर किया गया लेखन विशेष लेखन कहलाता है। विशेष लेखन के लिए संवाददाता को उसी क्षेत्र-विशेष से संबंधित लेखन-कार्य सौंपा जाता है, जिसमें उसकी रुचि होती है। इसके अलावा उसे विषय-संबंधी गहरी जानकारी होती है। विशेष लेखन केवल बीट रिपोर्टिंग न होकर उससे भी आगे एक तरह की विशेषीकृत रिपोर्टिंग है, जिसमें न सिर्फ़ उस विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसकी रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा-शैली पर भी पूर्ण अधिकार होना चाहिए। अधिकांश समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं के अलावा टी०वी० और रेडियो चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है। जैसे समाचार-पत्रों और अन्य माध्यमों में बिजनेस यानी व्यापार का अलग डेस्क होता है। इसी तरह खेल की खबरों और फ़ीचर के लिए खेल डेस्क अलग होता है।

प्रश्न-4 (ख) संपादक के मुख्य कार्य बताइए। 2

उत्तर- संपादक संवाददाताओं तथा रिपोर्टरों से प्राप्त समाचार सामग्री की अशुद्धियाँ दूर करते हैं तथा उसमें काट-छाँट करके त्रुटिहीन बनाकर प्रस्तुति के योग्य बनाते हैं। वे रिपोर्ट की महत्वपूर्ण बातों को सबसे पहले तथा कम महत्व की बातों को अंत में छापते हैं। वे सदैव समाचार-पत्र की नीति, आचार-संहिता और जन-कल्याण का विशेष ध्यान रखते हैं।

अथवा

उल्टा पिरामिड शैली से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- यह समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है। यह कहानी या कथा लेखन शैली की ठीक उलटी होती है। इसमें आधार ऊपर और शीर्ष नीचे होता है। इस शैली के तीन भाग महत्त्वपूर्ण भाग होते हैं- आरंभ में इंट्रो, मध्य में बॉडी और अंत में मुखड़ा होता है। अत: सबसे महत्त्वपूर्ण बात सबसे पहले और कम महत्त्वपूर्ण बात उसके बाद लिखा जाता है।

(पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 तथा पूरक पाठ्य पुस्तक वितान भाग-2) 20 अंक

प्रश्न-5 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3X2=6

(क) 'उषा' कविता में गौर झिलमिल देह किसकी है? आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- सूर्योदय का मनोरम चित्रण करते हुए कवि कहता है कि सुबह उगते हुए सूर्य की छवि आसमान में इस तरह दिखाई पड़ती है मानो कोई गौरवर्ण की नवयुवती किसी गहरे जल से युक्त नदी में स्नान कर रही हो। उसके डुबकी लगाकर स्नान करने से नदी के पानी में हिलोर उठ रही हो। यह गौर झिलमिल देह सूर्य की है और गहरा नीला जल प्रात:कालीन आसमान है। प्रकृति का यह सौन्दर्य अनुपम है। यह जादू जैसा लगता है। ऐसा लगता है जैसे नीले गहरे जल में किसी गोरी नवयुवती की सुंदर देह झिलमिला रही हो।

(ख) पेट की आग बुझाने के लिए लोग क्या-क्या कर्म करते हैं? तुलसी के समय बात क्या आज भी प्रासंगिक है?

उत्तर- कवितावली के पहले कवित्त में तुलसीदास जी वर्णन किया है कि इस संसार में पेट की आग बुझाने के लिए लोग तरह-तरह के कर्म करते हैं। किसान-मजदूर वर्ग खेती करता है, व्यापारी व्यापार या कारोबार करता है, भिखारी भीख माँगता है, चारण अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा करता है, नौकर सेवा करने का कार्य करता है, चतुर नट तरह-तरह के खेल दिखा कर लोगों का मनोरंजन करता है, चोर चोरी करता है, गुप्तचर गुप्त खबरें लाकर देता है और बाजीगर दांव खेलता है। शिकारी शिकार की तलाश में दिनभर गहन जंगल में भटकता है। अर्थात संसार के सभी लोग पेट भरने के लिए अनेक काम करते हैं, अपने गुणों के विकास करते हैं यहाँ तक कि अपनी जान जोखिम में डालकर मुश्किलों भरा कार्य करते हैं। लोग पेट भरने के लिए छोटे-बड़े सभी तरह के कार्य करते हैं तथा धर्म-अधर्म का विचार नहीं करते। यहाँ तक की पेट के लिए वे अपने बेटा-बेटी को भी बेचने का अधम कार्य हैं। हाँ, तुलसी के समय की यह बात आज भी उतनी ही प्रासंगिक है।

(ग) फ़िराक की गजल के पहले शेर में प्रकृति के सौन्दर्य का कैसा चित्रण है?

उत्तर- प्रकृति के सौंदर्य का मनमोहक चित्रण करते हुए शायर कहता है कि बसंत ऋतु में नए रस से भरी हुई कलियों ने अपने पंखुड़ी रूपी कोमल गाँठों (बंधन) को खोल दिया है। बगीचे में कलियाँ खिल कर धीरे-धीरे फूल बनने की ओर अग्रसर हैं। उन कलियों देखकर ऐसा लगता है मानो उनमें समाई हुई सुगंध और रंग दोनों बगीचे में उड़ जाने के लिए अपने पंखों की ताकत को आजमा रहे हों। कली, सुगंध और रंग में मानवीय क्रियाओं का आरोप किया गया है। उर्दू की गज़ल शैली में लिखी गई पंक्तियों में माधुर्य गुण विद्यमान है।

प्रश्न 6 निम्नलिखित चार प्रश्नों में से **किन्हीं तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3X3=9

(क) डॉ. आम्बेडकर ने समाज में श्रम-विभाजन को क्यों नहीं उचित माना है?

उत्तर- डॉ. आम्बेडकर ने समाज में श्रम-विभाजन को उचित नहीं माना है क्योंकि वे जाति व्यवस्था के खेदजनक परिणामों को स्वयं झेल चुके थे। उनका विश्वास था कि श्रम-विभाजन से केवल श्रमिकों का ही विभाजन नहीं होता बल्कि इससे श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन हो जाता है। इससे लोगों में ऊँच-नीच की भावना जन्म लेती है। अगर कार्य की कुशलता के लिए श्रम-विभाजन को मान भी लिया जाए तो यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं होता है। जाति-प्रथा में यह दोष है कि इसमें मनुष्य का पेशा उसके प्रशिक्षण या उसकी निजी क्षमता के आधार पर न करके उसके माता-पिता के सामाजिक स्तर से किया जाता है। यह मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है। पेशा बदलने की अनुमति न होने के कारण कई बार बेरोजगारी एवं भुखमरी की समस्या का सामना करना पड़ता है।

(ख) 'नमक' कहानी में सिख बीबी ने कीर्तन में किस विषय पर सबसे ज्यादा बात की? वहाँ से जाते समय उन्होंने साफिया से क्या मँगाया और क्यों?

उत्तर-सफ़िया अपने पड़ोसी सिख-परिवार के यहाँ कीर्तन में गई थी। वहाँ एक सिख बीवी को देखकर वह हैरान हो गई क्योंकि उसकी आँखें, भारी भरकम जिस्म, वस्त्र आदि सब सफ़िया की माँ की तरह ही थे। सफ़िया की प्रेम-दृष्टि से प्रभावित होकर सिख बीवी ने उसके बारे में अपनी बहूओं से पूछा। तब उन्हें पता चला कि वह लाहौर की रहने वाली है और कल सुबह ही अपने वतन जा रही है। सिख बीबी साफिया के पास आकर लाहौर की बातें करने लगी। उन्होंने बताया कि वह विभाजन के बाद ही भारत आई थीं। लेकिन वे अपना वतन लाहौर को ही मानती हैं। कीर्तन समाप्त होने के समय सफ़िया ने लाहौर से कुछ लाने के लिए पूछा। उन्होंने हिचकिचाहट के साथ लाहौरी नमक लाने के लिए कहा। इसका कारण था कि उन्हें अपने वतन से और वहाँ की वस्तुओं से बहुत लगाव था।

(ग) बाबा भीमराव आम्बेडकर के अनुसार उनकी कल्पना का आदर्श समाज कैसा होना चाहिए? अपने शब्दों में अभिव्यक्त करें।

उत्तर- डॉ. भीमराव आम्बेडकर की कल्पना का आदर्श समाज सभी लोगों के विकास की असीम संभावनाओं को तलाशता है। उनका आदर्श समाज मूल रूप से तीन बातों- स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता पर आधारित होगा। जिस तरह से आवागमन, जीवन की सुरक्षा, संपत्ति, जीविकोपार्जन के लिए जरूरी औजार व सामग्री रखने के अधिकार की स्वतंत्रता पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होती उसी तरह मनुष्य के सक्षम व प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए लोगों को तैयार रहना चाहिए। मनुष्य वंश परंपरा, सामाजिक उत्तराधिकार और स्वयं के प्रयत्न की दृष्टि से समान नहीं होते। इन तीनों कारणों से व्यक्ति के साथ असमानता का व्यवहार करना अनुचित है। स्वयं के प्रयत्न के आधार पर असमान व्यवहार उचित है, परंतु अन्य दो के आधार पर असमानता का व्यवहार अनुचित है। हर व्यक्ति को विकास करने का अवसर मिलना चाहिए। उनका कहना था कि भ्रातृता अर्थात भाईचारे पर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता तो होनी ही चाहिए

कि जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। इसके लिए व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देनी होती है।

(घ) नए राजकुमार के शासन संभालते ही राज्य में क्या-क्या परिवर्तन हुए और लुट्टन पहलवान पर इसका क्या असर हुआ?

उत्तर- लुट्टन पहलवान पंद्रह वर्ष तक राज-दरबार में रहा। उसकी प्रसिद्धि चारों ओर फ़ैल गई थी। लेकिन वृद्ध राजा श्यामानंद के मरने के बाद नए राजकुमार ने गद्दी संभालते ही उसे दरबार से हटा दिया। कुश्ती के खेल की जगह घुड़दौड़ शुरू हो गयी। शासन में भी आमूल-चूल परिवर्तन किया गया । लुट्टन पहलवान अपने दोनों बेटों को लेकर गाँव लौट आया। उसने गाँव के बाहर एक झोपड़ी बनाकर अपना अखाड़ा बनाया तथा ग्रामीण युवकों को कुश्ती सिखाने लगा। अकस्मात सूखा व महामारी से गाँव में हाहाकार मच गया। उसके दोनों बेटे भी इस महामारी की चपेट में आ गए और उनकी मृत्यु हो गयी। वह उन्हें कंधे पर लादकर नदी में बहा आया। पहलवान हर रोज रात को ढोलक बजाता रहा। पुत्रों की मृत्यु के कुछ दिन बाद उसकी भी मौत हो गई।

प्रश्न 7 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3

(क) ऐन फ्रैंक की डायरी द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यहूदियों पर ढाए गए जुल्मों का जीवंत दस्तावेज़

द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान नाजियों द्वारा यहूदी परिवारों को अकल्पनीय यातनाओं एवं जुल्मों को सहना पड़ा। उन दिनों उनका जीवन नारकीय हो गया था। वे अपनी जान बचाने के लिए छिपते-फिरते रहे। ऐन के अनुसार यहूदी परिवारों को गुप्त आवास में छिपकर जीवन बिताना पड़ता था। इन्हीं में से एक ऐन फ्रैंक का परिवार था। मुसीबत के इस समय में फ्रैंक के ऑफ़िस में काम करने वाले इसाई कर्मचारियों ने भरपूर मदद की थी। ऐन फ्रैंक ने अज्ञातवास में बिताए दो वर्षों के समय को अपनी डायरी में लिपिबद्ध किया है। फ्रैंक की इस डायरी में भय, आतंक, भूख, प्यास, मानवीय संवेदनाएँ, घृणा, प्रेम, बढ़ती उम्र की पीड़ा, पकड़े जाने का डर, हवाई हमले का डर, बाहरी दुनिया से अलग-थलग रहकर जीने की पीड़ा, युद्ध की भयावह पीड़ा और अकेले जीने की व्यथा का वर्णन है। इसके अलावा इसमें यहूदियों पर ढाए गए जुल्म और अत्याचार का वर्णन किया गया है।

अथवा

नगर-नियोजन की मुअनजो-दड़ो अनूठी मिसाल है। इमारतें भले ही खंडहरों में बदल चुकी हों मगर शहर की सड़कों और गलियों से सारी बातें स्पष्ट हैं। मुअनजो-दड़ो की नगर-योजना बेमिसाल है। यहाँ की सड़कें सीधी या फिर आड़ी हैं जिसे वास्तुकार आज 'ग्रिड प्लान' कहते हैं। शहर से जुड़ी हर चीज अपने स्थान पर है। मुख्य सड़क की चौड़ाई तैंतीस फुट है। सड़क के दोनों ओर घर हैं , परंतु घरों के दरवाजे सड़क की ओर नहीं हैं बल्कि वे गलियों की ओर हैं। सड़क के दोनों तरफ ढँकी हुई नालियाँ हैं। पानी के लिए कुंओं का प्रबंध किया गया है। हर घर में स्नानघर है। घरों से गन्दा पानी निकालने के लिए नालियाँ बनाई गई हैं। भवन निर्माण के लिए पक्की ईंटों का इस्तेमाल किया गया है। आज की सेक्टर-मार्का कालोनियों में जीवन की गतिशीलता नहीं होती। नया नियोजन शहर को विकसित नहीं होने देता। लेकिन मुअनजो-दड़ो की नगर-योजना दर्शकों को अभिभूत करती है।

(ख) 'डायरी के पन्ने' पढ़ने से ऐन फ्रैंक की **परिपक्वता और समझदारी** पता चलता है। उसके धैर्य और प्रतिभा का परिचय हमें उसकी डायरी से मिलता है। उसमें किशोरावस्था की झलक कम और मानसिक मजबूती अधिक दिखाई पड़ती है। वह एक सकारात्मक और सुलझी हुई सोच के साथ आगे बढ़ रही थी। उसमें कमाल की सहनशक्ति थी। कई बातें जो उसे बुरी लगती थीं उन्हें वह शालीनता के साथ बड़ों का सम्मान करते हुए सहन कर लेती थी। पीटर के प्रति अपने अंतरंग भावों को भी वह केवल डायरी में व्यक्त करती है। उसकी परिपक्व सोच का ही परिणाम है कि वह अपने मन के भा वों, उद्गारों और विचारों आदि को डायरी में ही व्यक्त करती है। यदि ऐन में सधी हुई परिपक्वता न होती तो हमें युद्ध काल की ऐसी दर्द-भरी कहानी पढ़ने को नहीं मिलती। 2

अथवा

मुअनजो-दड़ो में टीले के पास ही महाकुंड है। यह 40 फुट लंबा, 25 फुट चौड़ा व 07 फुट गहरा है। उतरने इसमें के लिए उत्तर व दक्षिण से सीढ़ियाँ बनी हैं। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि इसका प्रयोग सामूहिक स्नान के लिए किया जाता रहा होगा। कुंड का तल और दीवारें पक्की ईटों से बनाई गई हैं जिनके बीच चूने और चिरोड़ी के गारे का इस्तेमाल हुआ है। ताकि कुंड का पानी रिस न सके और बाहर का अशुद्ध पानी कुंड में न मिल सके। यहाँ तक आने वाले मार्ग का नाम नाम 'दैव मार्ग' रखा गया है। इसके तीन तरफ साधुओं के कक्ष हैं तथा उत्तर में दो पाँत में आठ स्नानघर हैं। इनमें किसी का दरवाजा एक-दूसरे के सामने नहीं खुलता। पानी भरने के लिए एक तरफ कुआँ है। कुंड से पानी को बाहर निकालने के लिए नालियाँ हैं। ये पक्की ईटों से बनी हैं तथा से ढकी भी हैं। ऐसा माना जाता है कि यह किसी अनुष्ठान के समय उपयोग में लाया जाता था।

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 2021-22

विषय - हिंदी (आधार)

विषय कोड - 302 / सत्र - 2 (3)

कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समय : 2 घंटे अधिकतम अंक : 40

<u>सामान्य निर्देश</u> : -

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए।
- इस प्रश्नपत्र में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।
- इस प्रश्नपत्र में कुल सात प्रश्न पूछे गए हैं। आपको सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- प्रश्नों में आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

(कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन) 20 अंक

प्रश्न-1 निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से **किसी एक** शीर्षक का चयन कर लगभग 150 शब्दों में एक रचनात्मक लेख लिखिए- 5X1=5

(क) महानगरीय जीवन की समस्याएँ

(ख) आधुनिक जनसंचार माध्यम

(ग) कोरोना संकट : महामारी एक चुनौती अनेक

प्रश्न-2 खाद्य पदार्थों में मिलावट से होने वाली की समस्याओं की चर्चा करते हुए अपने जिले के खाद्य निरीक्षक को पत्र लिखिए। 5X1=5

अथवा

चुनाव के दिनों में पार्टी कार्यकर्ताओं द्वारा घरों एवं विद्यालयों की दीवारों पर नारे और पोस्टर लगा देने से लोगों को होने वाली असुविधाओं की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

प्रश्न-3 (क) कहानी का क्या अर्थ बताते हुए इसके तत्वों के नाम लिखें।। 3X1=3

अथवा

नाटक और रेडियो नाटक के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न-3 (ख) नाटक में संकलनत्रय की क्या भूमिका होती है?? 2X1=2

अथवा

कहानी की संवाद योजना पर अपने विचार व्यक्त कीजिए?

प्रश्न-4 (क) पीत पत्रकारिता, पेजथ्री पत्रकारिता से किस तरह से भिन्न है? 3X1=3

अथवा

स्तंभ लेखन और संपादकीय लेखन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न-4 (ख) जनसंचार की मुख्य विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। 2X1=2

अथवा

समाचार लेखन के छः ककारों क्या महत्त्व है?

(पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 तथा पूरक पाठ्य पुस्तक वितान भाग-2) 20 अंक

प्रश्न-5 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3X2=6

(क) 'उषा' कविता में प्रयोग किए गए बिम्बों को उदहारण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप' प्रसंग के आधार पर बताइए कि श्रीराम किस वचन का पालन नहीं करते और वे किस कलंक को नहीं सह सकते हैं?

(ग) फ़िराक गोरखपुरी अपनी बेहतरीन गजलों के लिए किसे महत्त्व देते हैं और क्यों?

प्रश्न 6 निम्नलिखित चार प्रश्नों में से **किन्हीं तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3X3=9

(क) डॉ.आम्बेडकर के अनुसार जातिप्रथा के खेदजनक परिणाम क्या हैं?

(ख) नमक ले जाने के संबंध में साफिया ने अपने भाई से क्या सवाल किया और उसके भाई ने क्या जवाब दिया?

(ग) पहलवान की ढोलक का गाँव वालों पर क्या असर होता था?

(घ) 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर बताइए कि लुट्टन किस प्रकार लुट्टन पहलवान बना?

प्रश्न 7 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3X1=3

(क) "यह साठ लाख लोगों की तरफ से बोलने वाली एक आवाज है। एक ऐसी आवाज जो किसी संत या कवि की नहीं, बल्कि एक साधारण लड़की की है।" इल्या इहरनबुर्ग की इस टिप्पणी के संदर्भ ऐन फ्रैंक की डायरी पर विचार कीजिए।

अथवा

लेखक किन कारणों से सिन्धु सभ्यता को खेतिहर और पशुपालक सभ्यता कहता है?

(क) 'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर ऐन फ्रैंक के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए। 2X1=2

अथवा

मोहनजोदड़ों की सभ्यता को लेखक जल संस्कृति कहने के पक्ष में क्यों है?

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 2021-22

विषय - हिंदी (आधार)

विषय कोड - 302 / सत्र - 2 (3)

कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समय : 2 घंटे अधिकतम अंक : 40

सामान्य निर्देश : -

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए।
- इस प्रश्नपत्र में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।
- इस प्रश्नपत्र में कुल सात प्रश्न पूछे गए हैं। आपको सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- प्रश्नों में आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

(कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन) 20 अंक

प्रश्न-1 निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से **किसी एक** शीर्षक का चयन कर लगभग 150 शब्दों में एक रचनात्मक लेख लिखिए- 5

(क) महानगरीय जीवन की समस्याएँ

भूमिका- मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि उसे अधिक से अधिक सुख-सुविधाएँ मिलें। इन्हीं सुख-सुविधाओं को वह खोजता हुआ वह शहर की ओर आता है। शहरी जीवन उसे बड़ा आकर्षक लगता है पर यहाँ की सच्चाई कुछ और ही होती है। बड़े-बड़े नगरों को 'महानगर' कहा जाता है। प्रकृति का नियम है कि छोटी बस्तियां फैलकर गांव में, गांव फैलकर कस्बे में, कस्बे फैलकर नगर में तथा नगर फैलकर महानगर में परिवर्तित हो जाते हैं। जब देश के ग्रामीण उद्योग धंधे नष्टप्राय होने लगे, तो नगरों तथा महानगरों का विकास प्रारंभ होने लगा। देश में महानगरों की संख्या बढ़ने लगी और महानगरीय जीवन समस्याग्रस्त हो गया।

विषयवस्तु- जनसंख्यावृद्धि महानगरों की मुख्य समस्या है। देश में ग्राम व्यवस्था चरमराने के उपरांत महानगरों की जनसंख्या वृद्धि की गति पहले ही तीव्र थी, उस पर काम धंधों की खोज में गांवों से पलायन करने वाले लोगों ने जनसंख्या का दबाव अधिक बढ़ा दिया। अतः तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या का दबाव महानगरों की प्रथम विकट समस्या है। आवास की समस्या महानगरों में बढ़ती हुई अपार जनसंख्या का ही परिणाम है। जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में आवास की सुचारु व्यवस्था न हो पाने के कारण महानगरों के आलीशान भवनों की बगल में झोपड़-पट्टियों का निर्माण होने लगा। धीरे-धीरे आवास की समस्या ने एक विकट समस्या का रूप धारण कर लिया।इसके फलस्वरूप महानगरों में गंदगी बढ़ती गई तथा वहां के लोगों को नारकीय जीवन व्यतीत करने हेतु बाध्य होना पड़ा। धीरे-धीरे इसके दुष्परिणाम हमारे सामने आने लगे। महानगरों में आवास की जटिल समस्या के परिणाम स्वरूप लोगों ने सार्वजनिक स्थलों-पार्क, सड़क एवं

सरकारी भूमि आदि पर अनधिकृत कब्जे करने प्रारंभ कर दिए। इसके कारण अनेक स्थानों पर यातायात में बाधा आने लगी। विभिन्न स्थानों पर गंदगी और कूड़े-कचरे के ढेर दिखाई देने लगे। इस समस्या का निदान आज तक भी संभव नहीं हो सका।

महानगरों की एक अन्य समस्या यह है कि उनका आकार बेतरतीब ढंग से लगातार बढ़ते जाना। ज्यों-ज्यों महानगरों में जनसंख्या बढ़ने लगी, त्यों-त्यों लोगों का दूर-दूर तक निरंतर बसते जाना प्रारंभ हो गया। इतनी दूर तक आने जाने के लिए यातायात और परिवहन की समस्याएं उत्पन्न हो गईं। वहां रहने वाले लोगों का आधा समय घर से कार्यालय जाने तथा आने में व्यतीत हो जाता है। इसके अतिरिक्त वहां रहने वाले लोगों की संख्या के अनुपात में यातायात के साधनों के अभाव के कारण उन्हें बसों में धक्के-मुक्के खाकर आना-जाना पड़ता है। बसों में अधिक भीड़ होने से कई बार अनेक लोगों की जेबें कट जाती हैं। यह समस्या भी दिनोंदिन बढ़ती जा रही है।

निरंतर हो रहे औद्योगीकरण ने महानगरीय जीवन को कई तरह से प्रदूषित एवं समस्याग्रस्त बना रखा है। औद्योगीकरण के कारण सबसे पहले वायु प्रदूषण का शिकार होती है। उद्योगों के संयंत्र बड़े पैमाने पर ऊर्जा पैदा करते हैं। इसी गरमी से समस्त वातावरण में वायु प्रदूषण बढ़ता है। प्रदूषण के कारण मनुष्य अनेक प्रकार के मानसिक तथा शारीरिक रोगों का शिकार होता जा रहा है। इसके अतिरिक्त छोटी-बड़ी फैक्ट्रियों से निकलने वाले धुएं, कचरे, गंदे पानी आदि के फैलने से वातावरण दूषित हो रहा है। उद्योगों के कारण बढ़ते वाहनों का दबाव, उनसे निकलता धुआं और जहरीली गैसों ने महानगरों के वातावरण को विषाक्त एवं दमघोंटू बना दिया है। परिणाम स्वरूप पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है। लोग श्वास रोग, अंधत्व, अपंगता, विक्षिप्तता आदि से ग्रस्त हो रहे हैं। बड़े महानगरों में वाहनों से निकलता धुआं नरक बना देता है। वाहनों की आवाज ध्वनि प्रदूषण में वृद्धि करती है।

उपसंहार- इस प्रकार देखा जाए तो एक ओर महानगर जहाँ मनुष्य के समस्त भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए आकर्षण का केंद्र होते हैं, वहीं दूसरी ओर इनमें निहित विषमताएँ लोगों को अभिशप्त जीवन जीने के लिए भी बाध्य करती हैं । जिस तीव्र गति से महानगरों की जनसंख्या का घनत्व बढ़ता जा रहा है, उस गति से संसाधनों का विकास हो पाना संभव नहीं है जिसके परिणामस्वरूप यहाँ का जीवन पहले की तुलना में अधिक संघर्षमय हो गया है।

(ख) आधुनिक जनसंचार माध्यम

भूमिका- अपने विचारों, भावनाओं व सूचनाओं को सम्प्रेषित करने के लिए मनुष्य को संचार की आवश्यकता पड़ती है। संचार मौखिक एवं लिखित दोनों रूपों में हो सकता है। पहले मनुष्य आपस में बोल या इशारे से अपनी अभिव्यक्ति करता था। वैज्ञानिक प्रगति ने उसे संचार के अन्य साधन भी उपलब्ध करवाए। अब मनुष्य दुनिया के छोर पर मौजूद व्यक्ति से दुनिया के दूसरे छोर से वैज्ञानिक उपकरणों की सहायता से बात करने में सक्षम है। ये वैज्ञानिक उपकरण ही संचार के साधन कहलाते हैं।

विषयवस्तु- जिन साधनों का प्रयोग कर एक बड़ी जनसंख्या तक विचारों, भावनाओं व सूचनाओं को सम्प्रेषित किया जाता है, उन्हें हम जनसंचार माध्यम कहते हैं। जनसंचार माध्यमों को कुल तीन वर्गों-मुद्रण

माध्यम, इलेक्ट्रानिक माध्यम एवं नव-इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में विभाजित किया जा सकता है। मुद्रण माध्यम के अन्तर्गत समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, पैम्फलेट, पोस्टर, जर्नल पुस्तकें इत्यादि हैं। टेलीफोन, रेडियो, समाचार-पत्र, टेलीविजन इत्यादि संचार के ऐसे ही साधन हैं टेलीफोन ऐसा माध्यम है, जिसकी सहायता से एक बार में कुछ ही व्यक्तियों से संचार किया जा सकता है, किन्तु संचार के कुछ साधन भी है, जिनकी सहायता से एक साथ कई व्यक्तियों से संचार किया जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के अन्तर्गत रेडियो, टेलीविजन एवं फिल्में आती है और इण्टरनेट जनसंचार का नव-इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है। इनमें से रेडियो, टेलीविजन एवं इंटरनेट वेब तरंगों के माध्यम से कार्य करते हैं। वर्तमान समय में वेब तरंगों की सहायता से सूचना का आदान-प्रदान करने में मोबाइल भी काफी सुगम व सशक्त साधन बन गया है। ऑर्थर सी क्लार्क ने कहा भी है- "वेब तरंगों हेतु सीमाएं महत्व नहीं रखती और अन्तरिक्ष की ऊंचाइयों से तो राष्ट्रीय सीमाएँ स्वतः मिल जाती हैं। आने वाले कल का संसार सीमा बन्धन से मुक्त होगा।"

आज इण्टरनेट पर पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं, रेडियो के चैनल उपलब्ध हैं और टेलीविजन के लगभग सभी चैनल भी मौजूद है। इण्टरनेट के माध्यम से आज शैक्षणिक पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा सकता है। विश्व के एक छोर से दूसरे छोर पर स्थित पुस्तकालय से जुड़कर किसी विषय का विशेष ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति अपनी संस्था तथा उसकी गतिविधियों, विशेषताओं आदि के बारे में इण्टरनेट पर अपना बेबपेज बना सकता है, जिसे करोड़ों लोग अपने इण्टरनेट पर देख सकते हैं। विश्वव्यापी वेब (www) वैश्विक पहुँच का सर्वोत्तम साधन सिद्ध हो रहा है। पहले ई-मेल के माध्यम से दस्तावेजों एवं छवियों का आदान-प्रदान ही किया जाता था, अब ऑनलाइन बातचीत का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है के माध्यम से हम किसी भी मुद्दे पर बहस कर सकते है। इण्टरनेट के माध्यम से मीडिया हाउस ध्वनि और दृश्य दोनों माध्यमों के द्वारा ताजातरीन खबरे और मौसम सम्बन्धी जानकारियाँ हम तक आसानी से पहुँचा रहे है।

नेता हो या अभिनेता, विद्यार्थी हो या शिक्षक, पाठक हो या लेखक, वैज्ञानिक हो या चिन्तक सबके लिए इण्टरनेट समान रूप से उपयोगी साबित हो रहा है। उपरोक्त जनसंचार के माध्यमों के प्रमुख कार्य हैं- लोकमत का निर्माण, सूचनाओं का प्रसार, भ्रष्टाचार एवं घोटालों का पर्दाफाश तथा समाज की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करना। इन माध्यमों से लोगों को देश की प्रत्येक गतिविधि की जानकारी तो मिलती ही हे, साथ ही उनका मनोरंजन भी होता है। किसी भी देश में जनता का मार्गदर्शन करने के लिए निष्पक्ष एवं निर्भीक जनसंचार माध्यमों का होना आवश्यक है। ये देश की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की सही तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। चुनाव एवं अन्य परिस्थितियों में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों से जन-साधारण को अवगत कराने की जिम्मेदारी भी जनसंचार माध्यमों को ही बहन करनी पड़ती है। ये सरकार एवं जनता के बीच एक सेतु का कार्य करते है इसे हम मीडिया भी कहते हैं।

उपसंहार- आधुनिक संचार माध्यमों से जनता की समस्याओं को जन-जन तक पहुँचाया जाता है। विभिन्न प्रकार के अपराधों एवं घोटालों का पर्दाफाश कर ये देश एक समाज का भला करते हैं। इस तरह से आधुनिक समाज में लोकतन्त्र के प्रहरी के रूप में जन संचार के साधनों का महत्त्व अधिक है। यही कारण है

कि इन्हें लोकतन्त्र के चतुर्थ स्तम्भ की संज्ञा दी गई है। आशा है आने वाले वर्षों में भारतीय मीडिया अपना कर्तव्य पूरी ईमानदारी के साथ निभाते हुए देश के विकास में और सहयोग करेगा।

(ग) कोरोना संकट : महामारी एक चुनौती अनेक

भूमिका- कोरोना एक वायरस जनित रोग है जिसने महामारी का रूप ले लिया है और समस्त संसार में तबाही मचा रहा है। इस रोग की शुरुआत जुकाम एवं खासी मात्र से होती है जो धीरे-धीरे आगे चल कर एक विकराल रूप ले लेती है और रोगी के स्वसन तंत्र को बुरी तरह प्रभावित करती है कि रोगी की मृत्यु हो जाती है। वर्ष 2019 में इसका विकराल रूप चीन में देखा गया जो अब धीरे-धीरे पूरे विश्व में फैलता जा रहा है। यह एक ऐसी बीमारी है जो सीधे तौर पर मनुष्य के श्वसन तंत्र को प्रभावित करती है। इस बीमारी से सारी दुनिया बुरी तरह प्रभावित है। डब्लू एच ओ इसे महामारी घोषित कर चुका है। इसके शुरुवाती लक्षण फ्लू जैसे ही होते हैं जो धीरे-धीरे एक विकराल रूप धारण कर लेता है।

विषयवस्तु- कोरोना से बचाव करने में ही समझदारी है क्योंकि यह एक संक्रामक रोग है जो बहुत ही तेजी से एक दूसरे में फैलता है। डब्लू एच ओ ने कुछ सावधानियों की सूची निकाली है और यह भी बताया है कि कोरोना से बचाव के ये मूल मंत्र हैं। कोरोना का संक्रमण बड़ी आसानी से फ़ैल जाता है। इसकी अब तक कोई दवा नहीं मिली है इसलिये इसे बहुत घातक रोग की श्रेणी में रखा गया है। कोरोना के मामले दिन-प्रतिदिन पूरी दुनिया में बढ़ते जा रहे हैं। डब्लू एच ओ ने इसे महामारी घोषित कर दिया है। इतिहास इस बात का गवाह है की हर 100 वर्ष पर दुनिया में कोई न कोई महामारी जरुर आती है। और इससे बचने का सबसे अच्छा उपाय है बचाव। कुछ ऐसे कदम जो आप निजी तौर पर ले सकते हैं जिससे आप खुद को इससे बचा सकते हैं। कोरोना वायरस बीमारी के पता चलने के बाद विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार सूखी खांसी, सांस लेने मे तकलीफ जैसी समस्या इसके प्रमुख और प्रारंभिक लक्षण है। शुरु मे यह आम सर्दी जुकाम जैसा प्रतीत होता है पर जांच के बाद ही यह पता लगाया जा सकता है कि यह कोरोना है या नही। छींक आने पर व्यक्ति के अंदर से निकले छींक के कणों के कारण यह हवा मे फैल जाते है, और उसके संपर्क मे आने वाले व्यक्ति को यह संक्रमण आसानी से हो सकता है।
यह एक बेहद खतरनाक संक्रमण है जो कि आमतौर पर दिखाई नही देता है, और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के संपर्क मे आने से यह संक्रमण फैलता है। भारत मे यह संक्रमण पहली बार फरवरी-2020 मे पाया गया, और आज यह संक्रमण तेजी से फैल रहा है। इसे लेकर हमे बहुत सावधान रहने की जरुरत है, और जितना हो सके लोगों के संपर्क मे आने से बचे और खुद को और अपने परिवार को सुरक्षित रखे।

- सदैव बहार से आने के बाद अपने हाथों को साबुन से करीब 20-30 सेकंड तक अवश्य धोएं।
- अपने हाथों को अपने मुख से दूर ही रखें, जिससे की संक्रमण होने पर भी आपके अंदर न जा पाए।
- लोगों से 5 से 6 फीट की दूरी सदैव बनाये रखें।
- जरूरी न हो तो बाहर न जाये।
- सार्वजनिक स्थानों पर जाने से बचें।

- सदैव मास्क और ग्लव्स पहने।
- संक्रमण की स्थिति में खुद को दूसरों से अलग कर लें और नजदीकी अस्पताल में सूचित करें।

उपसंहार- कोरोना एक जान लेवा बीमारी है जो कभी भी और किसी को भी हो सकता है। इसलिये सावधानी बरतना अति आवश्यक है। लोगों में अधिक जागरूकता फैलाई जाए समझाए। इस बीमारी को दुनिया से ख़त्म करने की जंग में अपना बहुमूल्य योगदान देना सुनिश्चित करना चाहिए।

प्रश्न-2 खाद्य पदार्थों में मिलावट से होने वाली की समस्याओं की चर्चा करते हुए अपने जिले के खाद्य निरीक्षक को पत्र लिखिए। 5

दिनांक-25 दिसंबर, 2021

सेवा में,
खाद्य निरीक्षक,
केन्द्रीय भंडारण भवन,
गाँधी चौक, वाराणसी (उ.प्र.)।

विषय- खाद्य पदार्थों में मिलावट से होने वाली समस्याओं के संबंध में।

महोदय,

आपसे विनम्र निवेदन है कि मैं वाराणसी जिले के अंतर्गत रामनगर का रहने वाला हूँ। इन दिनों जिले के कुछ के क्षेत्रों में कई दुकानदार खाद्य पदार्थों में मिलावट करके खाने वाली वस्तुओं को बाजार में बेच रहे हैं। ये दुकानदार न केवल लोगों के विश्वास के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं बल्कि उनके स्वास्थ्य को चौपट करते हुए उन्हें बीमारियों के दलदल में धकेल रहे हैं। मिलावटी खाद्य पदार्थ खाने से बच्चों और बूढ़ों को सबसे ज्यादा तकलीफ़ हो रही है। कई लोग पेट दर्द, सिर दर्द और मितली आने जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं। डॉक्टर की लम्बी-चौड़ी फ़ीस से उन पर दोहरी मार पड़ रही है।

अत: आपसे आग्रह है कि आप मिलावट करने वाले दुकानदारों के ख़िलाफ़ अभियान चलाकर उन पर कड़ी निगरानी करवाएँ और आम लोगों को मिलावटी खाद्य पदार्थों के सेवन बचने की चेतावनी जारी करें। आशा करता हूँ कि आप मेरे इस पत्र पर विचार करते हुए आवश्यक कार्यवाही करेंगे। मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा।
धन्यवाद।
भवदीय

राज किशोर सैनी

101, रामनगर, वाराणसी

दूरभाष – 9913344551

अथवा

चुनाव के दिनों में पार्टी कार्यकर्ताओं द्वारा घरों एवं विद्यालयों की दीवारों पर नारे और पोस्टर लगा देने से लोगों को होने वाली असुविधाओं की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए किसी समाचार पत्र के मुख्य संपादक को पत्र लिखिए।

दिनांक- 30 सितंबर, 2021

सेवा में,

मुख्य संपादक,

जनसत्ता (दैनिक समाचारपत्र)

शहीद चौक, नई दिल्ली।

विषय- चुनाव के दिनों में पार्टी कार्यकर्ताओं द्वारा घरों एवं विद्यालयों की दीवारों पर नारे और पोस्टर लगाना।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि मैं आपके लोकप्रिय दैनिक समाचारपत्र 'जनसत्ता' का नियमित पाठक हूँ। इस समाचारपत्र में प्रकाशित विश्लेषणपरक लेख पढ़ने से ज्वलंत मुद्दों की सटीक जानकारी मिलती है। इस समाचारपत्र के माध्यम से मैं चुनाव के दिनों में पार्टी कार्यकर्ताओं द्वारा घरों एवं विद्यालयों की दीवारों पर नारे और पोस्टर लगाने से होने वाली समस्याओं की ओर आम जनता का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। चुनाव का दौर आते ही लगभग सभी राजनीतिक पार्टियों के कार्यकर्त्ता, लोगों के घरों की दीवारों और विद्यालय के भवनों, अस्पतालों के अहाते इत्यादि पर राजनेताओं की तस्वीर, नारे और विजयी बनाएँ जैसे पोस्टर लगा देते हैं। इससे लोगों को कितनी परेशानी होती है, इसका अंदाजा उन्हें नहीं होता है। जनता की मनोभावनाओं के साथ खिलवाड़ होता है। कई जगह तो अश्लील बातें भी लिख दी जाती हैं जिनका बहुत ही गंदा असर होता है। बच्चों और महिलाओं को शर्मिंदगी उठानी पड़ती है।

अत: आपसे निवेदन है कि आप मेरे उक्त विचार को अपने समाचार पत्र में के 'लोकवाणी' पृष्ठ पर प्रकाशित करने का कष्ट करें ताकि लोगों तक यह सन्देश पहुँचे कि घरों एवं विद्यालयों की दीवारों पर

नारे और पोस्टर लगाना उचित नहीं है। आशा करता हूँ कि आप मेरे पत्र पर अवश्य विचार करेंगे। मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा।

धन्यवाद।

भवदीय

पुलकित सनेही

हौजपुर खास (नई दिल्ली)

दूरभाष – 1100334455

प्रश्न-3 (क) कहानी का क्या अर्थ बताते हुए इसके तत्वों के नाम लिखें। 3X1=3

उत्तर- कहानी गद्य साहित्य की वह सबसे अधिक रोचक एवं लोकप्रिय विधा है जो जीवन के किसी विशेष पक्ष का मार्मिक, भावनात्मक और कलात्मक वर्णन करती है। साहित्य की सभी विधाओ में कहानी सबसे पुरानी विधा है। जनजीवन में यह सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है। प्राचीन काल में कहानियों को कथा, आख्यायिका, गल्प आदि कहा जाता था। वर्तमान दौर में भी कहानी सबसे अधिक प्रचलित है। साहित्य में यह अब अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी है। पुराने समय मे कहानी का मतलब था उपदेश देना या मनोरंजन करना। आज इसका लक्ष्य मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं और संवेदनाओ को व्यक्त करना है। यही कारण है कि प्राचीन काल की कहानी से आज की कहानी बिल्कुल भिन्न हो गयी है।

कहानी के निम्नलिखित छह तत्व होते हैं- 1-कथावस्तु 2-चरित्र-चित्रण 3-कथोपकथन 4-देशकाल 5-भाषा-शैली 6-उद्देश्य

अथवा

रंगमंचीय नाटक और रेडियो नाटक के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- रंगमंचीय नाटक और रेडियो नाटक में बहुत अंतर होता है। रंगमंचीय नाटकों में दृश्य और श्रव्य दोनों तत्त्व समाहित होते हैं। जबकि रेडियो नाटक में केवल श्रव्य तत्व होता है। जहाँ रंगमंचीय नाटक के मंचन के लिए मंच की जरुरत होती है वहीँ रेडियो नाटक के लिए किसी मंच की आवश्यकता नहीं होती है। रंगमंचीय नाटक में पात्र और समय अधिक हो सकते हैं जबकि रेडियो नाटक में पात्र और समय सीमित होते हैं। रंगमंचीय नाटक में संकलनत्रय की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। जबकि रेडियो नाटक में पात्रों के संवाद, ध्वनि और संगीत की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

प्रश्न-3 (ख) नाटक में संकलनत्रय की क्या भूमिका होती है? 2X1=2

उत्तर- नाटक में संकलनत्रय की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। संकलनत्रय का मतलब है नाटक में देश, काल और वातावरण में सामंजस्य स्थापित करना। किसी देश या क्षेत्र की विशेषताओं के अनुरूप उस

समय लोग जिस तरह की भाषा बोलते हैं और जिस तरह की उनकी वेशभूषा होती है, उन सब को मंच पर पात्रों के अभिनय के माध्यम से दिखाया जाता है। इनके समन्वय को संकलनत्रय कहा जाता है।

अथवा

कहानी की संवाद योजना पर अपने विचार व्यक्त कीजिए?

उत्तर- कहानी में संवाद योजना का विशेष महत्त्व है। इनके द्वारा पात्रों के मानसिक अन्तर्द्वन्द एवं अन्य मनोभावों को प्रकट किया जाता है। पात्रों के पारस्परिक वार्तालाप को कथोपकथन कहते हैं। कथोपकथन के दो कार्य होते हैं- पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को उद्घाटित करना और कथा की गति को विकसित करना। संक्षिप्त एवं संयत कथोपकथन कहानी में आकर्षण उत्पन्न करने के साथ-साथ पाठकों की जिज्ञासा को शान्त करते हैं। कथोपकथन का प्रत्येक शब्द सार्थक और सोद्देश्य होना चाहिए ताकि वह पाठकों पर अपना प्रभाव उत्पन्न कर सके।

प्रश्न-4 (क) पीत पत्रकारिता, पेजथ्री पत्रकारिता से किस तरह से भिन्न है? 3

उत्तर- **पीत पत्रकारिता-** इस तरह की पत्रकारिता में झूठी अफवाहों, सनसनीखेज मुद्दों तथा खबरों को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कर प्रस्तुत किया जाता है। इसमें सही समाचारों की उपेक्षा करके ध्यान-खींचने वाले शीर्षकों का बहुतायत में प्रयोग किया जाता है।

पेज थ्री पत्रकारिता- पेज श्री पत्रकारिता का आशय उस पत्रकारिता से है, जिसमें फ़ैशन, अमीरों की बड़ी-बड़ी पार्टियों, महफ़िलों तथा लोकप्रिय लोगों के निजी जीवन के बारे में बताया जाता है। ऐसे समाचार सामान्यत: समाचार-पत्र के पृष्ठ तीन पर प्रकाशित होते हैं।

अथवा

संपादकीय लेखन और स्तंभ लेखन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- **संपादकीय लेखन-** संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय को उस अखबार की आवाज माना जाता है। संपादकीय के जरिये अखबार किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट करते हैं। संपादकीय किसी व्यक्ति-विशेष का विचार नहीं होता, इसलिए उसे किसी के नाम के साथ नहीं छापा जाता। किसी ताजी घटना के प्रति समाचारपत्र में प्रकाशित संपादक का नजरिया ही संपादकीय कहलाता है।

स्तंभ-लेखन- स्तंभ-लेखन विचारपरक लेखन का एक प्रमुख रूप है। कुछ महत्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते हैं। उनकी अपनी एक लेखन-शैली भी विकसित हो जाती है। ऐसे लेखकों की लोक- प्रियता को देखकर अखबार उन्हें एक नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा दे देते हैं। स्तंभ का विषय चुनने और उसमें अपने विचार व्यक्त करने की स्तंभ लेखक को पूरी छूट होती है। स्तंभ में लेखक के विचार अभिव्यक्त होते हैं। यही कारण है कि स्तंभ अपने लेखकों के नाम पर जाने और पसंद किए जाते हैं। कुछ स्तंभ इतने लोकप्रिय होते हैं कि वे अखबार की पहचान बन जाते हैं।

प्रश्न-4 (ख) जनसंचार की मुख्य विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर- जब संदेशों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया यंत्रों की सहायता से जनता के साथ बड़े पैमाने पर होती है तो वह जनसंचार कहलाता है। जनसंचार द्वारा सन्देश तीव्र गति से आम जनता तक पहुँचाया जा सकता है।

इसमें समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट, मोबाइलों आदि को शामिल किया जाता है। आम जनता पर जनसंचार का बहुत प्रभाव गहरा होता है। इसमें फीडबैक तुरंत नहीं प्राप्त होता है।

अथवा

समाचार लेखन के छह ककारों क्या महत्त्व है?

उत्तर- समाचार लेखन के छह ककारों पर ही पूरे समाचार का स्वरूप टिका होता है। ये छह हैं- क्या, कब, कौन, कहाँ, क्यों, और कैसे। इनमें पहले चार ककार क्या, कब, कौन और कहाँ सूचनात्मक होते हैं। अर्थात इन चार ककारों में समाचार के विषय से संबंधित सूचना होती है। आखिरी दो ककार क्यों और कैसे विवरणात्मक होते हैं। अर्थात इनमें उस समाचार का विस्तृत से विवरण व विवेचन किया जाता है। समाचार को प्रभावी बनाने के लिए इन छः ककारों का प्रयोग अनिवार्य होता है। पहले चार ककार समाचार का मुखड़ा तथा आखिरी दो ककार समाचार का मुख्य स्वरूप व समाचार समापन की प्रक्रिया के चरण होते हैं।

(पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 तथा पूरक पाठ्य पुस्तक वितान भाग-2) 20 अंक

प्रश्न-5 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3X2=6

(क) 'उषा' कविता में प्रयोग किए गए बिम्बों को उदहारण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि ने सूर्योदय से पहले के आकाश के लिए सबसे पहले नीले शंख का बिंब दर्शाया। कवि नेभोर के उस दृश्य को शंख के समान ही पवित्र माना है। फिर उसने भोर के नभ को राख से लीपे हुए चौके के रूप में बिंबित किया है क्योंकि भोर का नभ सफेद व नीले रंग से मिश्रित दिखाई देता है सुबह की नमी को गीला चौका बताया है। आसमान का सौंदर्य दर्शाने के लिए कवि ने सिल और स्लेट के बिम्बों का प्रयोग किया है । कवि ने अँधेरे को काली सिल माना है। सुबह की किरणें लालिमायुक्त होती हैं। ऐसे में सूर्योदय से ऐसा लगता है मानो किसी ने काली सिल को लाल केसर से धो दिया है। और अंत में कवि ने सुबह उगते हुए सूर्य का बिंब नीले जल में स्नान करती हुई गोरी नवयुवती के रूप में चित्रित किया है।

(ख) 'लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप' प्रसंग के आधार पर बताइए कि श्रीराम किस वचन का पालन नहीं करते और वे किस कलंक को नहीं सह सकते हैं?

उत्तर- लक्ष्मण के मुर्च्छित होने पर भाई के शोक में डूबे श्रीराम विलाप करते हुए कहते हैं कि अगर मुझे पता होता कि वन में जाकर अपने प्रिय भाई को खो दूँगा तो मैं पिताजी के उस वचन का पालन नहीं करता जिस कारण से मुझे वनवास मिला। अब मैं अयोध्या में क्या मुँह लेकर जाऊँगा? वहाँ सब लोग यही कहेंगे कि राम ने पत्नी के लिए प्रिय भाई को खो दिया। वे कहते हैं कि मैं इस संसार में नारी की रक्षा न कर पाने का अपयश आसानी से सहन कर लेता, किन्तु पत्नी के लिए भाई की क्षति

का अपयश सहन करना मुश्किल है। नारी की क्षति कोई विशेष क्षति नहीं है किन्तु नारी के लिए भाई की क्षति बहुत बड़ी क्षति है।

(ग) फ़िराक गोरखपुरी अपनी बेहतरीन गजलों के लिए किसे महत्त्व देते हैं और क्यों?

उत्तर- फ़िराक गोरखपुरी अपनी बेहतरीन गजलों के लिए अपने उस्ताद मीर को महत्त्व देते हैं। वे कहते हैं कि लोग उनकी गजलों पर लोग मुग्ध होकर उनसे पूछते हैं कि इतनी अच्छी शायरी करना उन्होंने कहाँ से सीखा। तब वे लोगों को इसका रहस्य बताते हुए कहते हैं कि इस कला में उनका कुछ नहीं है, उनके उस्ताद ने जैसा उन्हें सिखाया वैसा ही वे कहते हैं। उनकी आवाज में उनके उस्ताद का असर है। यही कारण है कि जब वे कोई गज़ल प्रस्तुत करते हैं तो उनके शब्दों से लोगों को शायर 'मीर' की गजलों की-सी समानता दिखाई पड़ती है। भाव यह है कि कवि की शायरी प्रसिद्ध कवि 'मीर' के समान ही उत्कृष्ट है।

प्रश्न 6 निम्नलिखित चार प्रश्नों में से **किन्हीं तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3X3=9

(क) डॉ. आंबेडकर के अनुसार जाति-प्रथा के खेदजनक परिणाम क्या हैं?

डॉ. आंबेडकर के अनुसार जाति-प्रथा के खेदजनक परिणाम निम्नलिखित हैं-

जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिकों का भी अस्वाभाविक विभाजन करती है। इससे श्रमिकों में ऊँच-नीच की भावना पनप जाती है। यह जन्म के आधार पर पेशा तय करती है जिसमें व्यक्ति की रूचि का कोई स्थान नहीं होता है। यह मनुष्य को सदैव एक व्यवसाय में बाँध देती है भले ही वह पेशा अनुपयुक्त व अपर्याप्त हो। जाति व्यवस्था की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि इसमें संकट के समय पेशा बदलने की अनुमति नहीं होती है, चाहे व्यक्ति भूखा ही क्यों न मर जाए। जाति-प्रथा के कारण थोपे गए व्यवसाय को व्यक्ति अनिच्छा से करता है। अत: यह त्याज्य है।

पहलवान की ढोलक का गाँव वालों पर क्या असर होता था?

उत्तर- पहलवान की ढोलक की आवाज गाँववालों के लिए संजीवनी बूटी की तरह काम करती थी। उनकी आँखों के आगे दंगल का दृश्य दिखाई पड़ने लगता था। उनकी स्पंदनहीन और शक्तिहीन स्नायुओं में अचानक बिजली दौड़ पड़ती थी। उनके मन में जिजीविषा पैदा हो जाती थी। बच्चे, बूढ़े और जवानों की आँखों में चमक भर जाती थी। लोग मृत्यु नहीं डरते थे बल्कि उसका सामना का साहस रखते थे। रात्रि की विभीषिका में चारों तरफ सन्नाटा होता था। ऐसे में उस विभीषिका को पहलवान की ढोलक ही चुनौती देती रहती थी। ढोल की आवाज से निराश लोगों के मन में उमंग जगती थी।

(ख) नमक ले जाने के संबंध में साफिया ने अपने भाई से क्या सवाल किया और उसके भाई ने क्या जवाब दिया?

उत्तर- साफिया का भाई एक बहुत बड़ा पुलिस अफ़सर था। वह कानून-कायदों से भली-भाँति परिचित था। साफिया को लगा कि नमक ले जाने के संबंध में वह सही राय दे सकेगा। वह अपने भाई से पूछती है कि क्या पाकिस्तान से लाहौरी नमक ले जाया जा सकता है। उसके भाई ने जवाब दिया कि वहाँ से नमक ले जाना गैरकानूनी है। वैसे भी भारत के हिस्से में नमक का क्षेत्र अधिक ही आया है। वहाँ से नमक ले

जाकर वह क्या करेगी। वह नहीं चाहता था कि उसकी बहन कस्टम कार्यों की जाँच में पकड़ी जाए। इसलिए उसने सफ़िया को नमक की पुड़िया ले जाने से मना कर दिया। उसने यह भी बताया कि पाकिस्तान और भारत के बीच नमक का व्यापार प्रतिबंधित है।

(ग) 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर बताइए कि लुट्टन किस प्रकार लुट्टन पहलवान बना?
उत्तर- जब लुट्टन नौ वर्ष का था तभी उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई। संयोग से उसका विवाह हो चुका था। अत: उसका पालन-पोषण उसकी विधवा सास ने किया। गाँव के लोग उसकी सास को तरह-तरह से सताते थे इसलिए उनसे बदला लेने के लिए वह पहलवानी करने लगा। वह धारोष्ण दूध पीता और खूब कसरत किया करता था। एक दिन वह श्यामनगर मेला देखने गया। वहाँ उसने दंगल में चाँद सिंह नामक पहलवान को हरा दिया। जिससे वहाँ के राजा ने खुश होकर उसे 'राज-पहलवान' बना दिया।
कुछ समय बाद उसने 'काला खाँ' जैसे प्रसिद्ध पहलवानों को भी हरा दिया। इस प्रकार वह लुट्टन से लुट्टन पहलवान बन गया।

प्रश्न 7 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) इल्या इहरनबुर्ग ने ऐन फ्रैंक के बारे में जो टिप्पणी की वह बिलकुल सही है। उस समय जर्मनी में सत्ता की बागडोर नाजियों के हाथ में थी जो यहूदी विरोधी थे। द्वितीय विश्व युद्ध के समय जर्मनी में यहूदियों की संख्या लगभग 60 लाख थी। सभी नाजीवादियों के जुल्म सहने को मजबूर थे। किसी में विरोध करने का साहस नहीं था। लेकिन 13 वर्ष की लड़की ऐन फ्रैंक ने यह साहस किया। ऐन ने 1942 से 1944 के दौरान नाजियों द्वारा किए जाने वाले जुल्मों और अत्याचारों को अपनी डायरी में लिखा। यह डायरी नाजियों की क्रूर मानसिकता का परिचय देती है। अकेली लड़की ने अपनी डायरी के कुछ पन्नों में 60 लाख यहूदियों का प्रतिनिधित्व किया। यह एक ऐसी आवाज़ थी जो यहूदियों के पक्ष में बोली जिसने नाजियों की यातनागृहों में यंत्रणाओं की खुद झेला था। ऐन फ्रैंक की आवाज़ न तो किसी भी संत-महात्मा की थी और न ही कवि की। किन्तु उसकी आवाज़ उनसे कहीं अधिक सशक्त है। 3

अथवा

मुअनजो-दड़ो में अनाज के भंडारण के लिए नौ-नौ चौकियों की तीन कतारें मिली हैं। अन्नागार तक पहुँचने के लिए बैलगाड़ियों के प्रयोग के साक्ष्य मिले हैं जो माल की ढुलाई करती होंगी। सिंधु घाटी काल में व्यापार के साथ उन्नत खेती भी होती थी। पत्थर व ताँबे की बहुतायत थी, परंतु लोहा नहीं था। पत्थर सिंध से तथा ताँबा राजस्थान से मिलता था। इनके उपकरण खेती-बाड़ी में प्रयोग किए जाते थे। यहाँ रबी की फसल में गेहूँ, जौ, सरसों व चने की खेती होती थी। यहाँ कपास, बेर, खजूर, खरबूजे, अंगूर, ज्वार, बाजरा और रागी की खेती भी होती थी। यहाँ से मिला सूती कपड़ा दुनिया के सबसे पुराने नमूनों में से एक है। दूसरा सूती कपड़ा तीन हजार ईसा पूर्व का है जो जॉर्डन में मिला। मुअनजो-दड़ो में रँगाई भी होती थी। अब इसे खेतिहर व पशुपालक सभ्यता माना जाता है। अब कुछ विद्वान इसे मूलत: खेतिहर व पशुपालक सभ्यता मानते हैं। इनके सबूत भी मिले हैं।

(ख) 'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर ऐन फ्रैंक के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए। 2

ऐन फ्रैंक का जन्म 12 जून, 1929 को जर्मनी के फ्रैंकफ़र्ट शहर में हुआ था। ऐन की मृत्यु फरवरी या मार्च, 1945 में नाजियों के यातनागृह में हुई। ऐन फ्रैंक की डायरी दुनिया की सबसे ज्यादा पढ़ी गई किताबों में से एक है। यह डायरी मूलत: 1947 में डच भाषा में प्रकाशित हुई थी। 'डायरी के पन्ने' पाठ पढ़ने के बाद ऐन फ्रैंक के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ नजर आती हैं-

1. **चिंतक व मननशील –** ऐन का बौद्धिक स्तर बहुत ऊँचा है। वह नस्लवादी नीति के प्रभाव को बहुत अच्छी तरह समझती है और उसका वर्णन भी करती है। उसकी डायरी भोगे हुए यथार्थ की उपज है। वह अज्ञातवास में रहते हुए भी अध्ययन करती है।
2. **स्त्री-संबंधी विचार –** ऐन फ्रैंक स्त्रियों की दयनीय दशा से चिंतित है। वह स्त्री-जीवन के अनुभव को अतुलनीय बताती है। वह चाहती है कि स्त्रियों को पुरुषों के बराबर सम्मान दिया जाए। वह स्त्री-विरोधी पुरुषों व उनके मूल्यों की भर्त्सना करना चाहती है।
3. **संवेदनशील –** ऐन संवेदनशील लड़की है। उसे बात-बात पर सबसे डाँट पड़ती है क्योंकि उसकी भावनाओं को समझने वाला कोई नहीं है। वह लिखती भी है-"काश! कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता।" अपनी डायरी में अपनी गुड़िया को वह पत्र लिखती है।

अथवा

मोहनजोदड़ों में नगरवासियों के लिए पानी की आपूर्ति कुँओं द्वारा की जाती थी। यहाँ लगभग सात सौ कुएँ पाए गए हैं। बस्ती के कुएँ एक ही आकार की पकी हुई ईंटों से बने हैं। हर घर में एक स्नानघर है। घर का गंदा पानी बाहर निकालने के लिए नालियाँ हैं जो हौदी तक जाती हैं। वहाँ वे सड़क के दोनों तरफ ढँकी हुई नालियों के जाल से जुड़ जाती हैं। नदी, कुएँ, स्नानागार और जल निकासी की बेजोड़ व्यवस्था सिंधु घाटी की विशेष पहचान है। इस मामले में उस सभ्यता का कोई मुकाबला नहीं। इसलिए लेखक इसे 'जल संस्कृति' कहने के पक्ष में है।